रेवरेन्ड डा. जोस वेट्टियांकल (विन्सेन्सियन समुदाय) साधना केन्द्र प्रवचक हैं। उनका पुरोहिताभिषेक 4 जनवरी 1988 को हुआ, तब से ही वे दुनिया के कोने कोने में प्रवचन कर रहे हैं। वे तमिलनाडु के मैलापूर धर्मप्रांत में न्यायधीकरण वकील के रूप में कार्य कर चुके हैं। और केरल के कोट्टायम धर्मप्रांत (बंधन) में बंधन के रक्षक भी रहे है। कुछ समय तक वे संत जोसेफ प्रांत के विन्सेन्सियन समुदाय के प्रांतीय अधिकारी रहे हैं। वर्तमान में लोगोस साधना केन्द्र बेंगलोर (भारत) के निदेशक हैं।

लोगोस साधना केन्द्र

सं. 29, प्रकृति टाउनशिप, 1व मेन, पी.ओ. 4326,
बाबुसाहिब पाल्या, संत जोसेफ पेरिश चर्च के निकट
बेंगलोर - 560 113.
वाटसआप : 9845039507

₹. 50.00

Dec 2018

पवित्र आत्मा का अभिषेक, मुक्ति, आंतरिक चँगाई, दिव्य करुणा की नोवेना और "मेरे पास आओ" नोवेना।

पवित्र आत्मा का अभिषेक, मुक्ति, आंतरिक चँगाई, दिव्य करुणा की नोवेना और "मेरे पास आओ" नोवेना।

रेवरेन्ड डा. जोस वेट्टियांकल, वी.सी.,
एल.ओ.सी.एल., पी.एच.डी., एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी.

इस प्रार्थना पुस्तक का प्रयोजन

यह येसु के साथ आठ आयाम रिश्ते को मजबूत और घनिष्ठ बनाने के लिए है (यदि तुम मुझ में बने रहो - योहन 15:7)

या 20 प्रार्थनाओं और पाँच गृहकार्य के समुच्चय द्वारा येसु के साथ मौजूदा रिश्ते को मजबूत करने के लिए है।

निम्नलिखित आठ आयाम संबंध से हर एक जन को अपनी हर तरह की समस्याओं को दूर करने, और हर प्रकार की बीमारियों से चँगाई पाने में मदद मिलती है। और इन सबसे बढ़कर, हमें पवित्र आत्मा के उमड़ते हुए करिश्माई, वरदान और फलों का उत्कृष्ट पेंतेकोस्तीय अनुभव होगा, जैसा कि प्रेरितों ने अनुभव किया था।

येसु के साथ आठ आयाम रिश्ते निम्नलिखित है:

1. अनुयायी (मत्ती 4:23-25)
2. शिष्य (लूकस 10:1)
3. प्रेरित (मत्ती 10:1-2, मारकुस 3:13-16)
4. मित्र, भाई और बहन (योहन 15:15, 20:7)
5. येसु के सहकर्मी (1 कुरि. 3:1)
6. ईश्वर के राज्य के राजदूत (2 कुरि. 5:20)
7. ख्रीस्त के प्रतिनिधि (गलतियों 2:20)
8. दाखलता और डालियों का संबंध। चरवाहा और भेड़ का संबंध। दुल्हा और दुल्हन का संबंध। (योहन. 15:5, 10:16, 2 कुरि. 11:2)

ये आठ आयाम संबंध की परिणति (या पराकाष्ठा / चरम बिन्दु) है।

दिव्य करुणा जो सबके लिए उंडेली जाती है उसकी कोई सीमा नहीं है। जीवतों के प्रकाश हमारे प्रभु पाप रूपी कब्र की चट्टान जो हमें परमेश्वर से अलग करती है लुढकाने को सदा तैयार है।

-संत पिता फ्रांसिस

His Grace Bernard Moras
Archbishop of Bengaluru

पवित्र आत्मा का अभिषेक
मुक्ति, आंतरिक चँगाई,
दिव्य करुणा की नोवेना,
'मेरे पास आओ' नोवेना।

लेखक :

रेवरेन्ड डा. जोस वेट्टियांकल, वी.सी.,

एल.ओ.सी.एल., पी.एच.डी., एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी.

निहित ओब्स्तात :

फा. जोन फ्रांसिस चेरियावेली, वी.सी.,

एम.ए., एम.टी.एच., पी.एच.डी., एस.टी.डी.

अनुमति:

उनकी कृपा बर्नाड मोरस

महा धर्माध्यक्ष, बेंगलूरु

25 फरवरी 2015

प्रकाशित

वेबसाईट : www.frjosevettiyankal.org

ई-मेल : frjosevet@gmail.com

विषय वस्तु

- अपनी सभी समस्याओं को कैसे सुलझाएँ (या समस्याओं से कैसे मुक्ति पाएँ) - पृ.सं. 03
- पवित्र आत्मा का अभिषेक - पृ.सं. 04
- पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करने के लिए - पृ.सं. 15
- छुटकारा पाने (या मुक्ति पाने के लिए) - पृ.सं. 36
- आंतरिक चँगाई - पृ.सं. 41
- दिव्य करुणा की नोवेना - पृ.सं. 51
- मेरे पास आओ नोवेना - पृ.सं. 63
- दैनिक प्रार्थना / गृहकार्य - पृ.सं. 97

दूत संवाद

V. प्रभु के दूत ने मरियम को सन्देश दिया।

R. और वह पवित्र आत्मा से गर्भवती हुई।.....प्रणाम मरियम...

V. देख, मैं प्रभु की दासी हूँ।

R. तेरा कथन मुझमे पूरा हो।.....प्रणाम मरियम

V. और शब्द देह बना

R. और हमारे बीच रहा।.....प्रणाम मरियम

V. हे ईश्वर की पवित्र माँ हमारे लिए प्रार्थना कर।

R. कि हम ख्रीस्त की प्रतिज्ञाओं के योग्य बन जाएँ।

हम प्रार्थना करें।

हे प्रभु हमने स्वर्गदूत के संदेश द्वारा तेरे पुत्र ख्रीस्त का देह धारण जान लिया। हमारी यह प्रार्थना सुन ले - अपनी कृपा हमारी आत्माओं को प्रदान कर, कि हम उन्हीं ख्रीस्त के दुःख और क्रूस द्वारा पुनरुत्थान की महिमा तक पहुँच सकें। उन्हीं हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

अपनी सारी समस्याओं को कैसे सुलझाएंगे?

आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए, ईश्वर से हर आशीष पाने के लिए, और स्वयं को विनाश से बचाने के लिए दैनिक प्रार्थना और गृह-कार्य अवश्य करें। कुल मिलाकर 20 तरह की प्रार्थनाएँ हैं जिन्हें तीन समुह में विभाजित किया गया है।

जैसे: व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ, सामुदायिक प्रार्थनाएँ, विशेष प्रार्थनाएँ

और पाँच गृहकार्य भी अवश्य करें।

1. बीस प्रार्थनाएँ - पृ.सं. 97-103
2. गृह कार्य 1 - ईश्वर को प्यार करने के 4 तरीके. पृ.सं. 104-105
3. गृह कार्य 2 - ईश्वर को प्यार करने की 4 विधियाँ. पृ.सं. 105-106
4. गृह कार्य 3 - पाँच सिद्धांत - पृ.सं. 107
5. गृह कार्य 4 - चंगाई के 10 स्त्रोत - पृ.सं. 107-109
6. गृह कार्य 5 - 20 प्रेरितिक कार्य - पृ.सं. 110-111

इन सभी प्रावधानों का उपयोग कीजिए, जिन्हें प्रभु ने आपकी चँगाई के लिए कलीसिया एवं दुनिया में व्यवस्था की है।

येसु से अत्युत्तम संबंध बनाने के लिए, आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए, सभी आशीर्वाद पाने के लिए, हर अधिकार और प्रभु से हर तरह, के रिश्ते का आनन्द उठाने के लिए, इस प्रार्थना पुस्तक से (पृ.सं. 97-112) की दैनिक प्रार्थना और गृह कार्य अवश्य करें।

पवित्र आत्मा का अभिषेक

पवित्र आत्मा के अभिषेक का वरदान ईश्वर की संतति को मिला है और यह ऊपर की शक्ति है (लूकस 24:49) जिसकी प्रतिज्ञा येसु ने अपने शिष्यों के लिए की है, जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है। पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रार्थना और विश्वास द्वारा प्राप्त होता है और पवित्र आत्मा से अभिषिक्त व्यक्ति, जिस पर हाथ रखकर प्रार्थना करता है उसे भी पवित्र आत्मा का अभिषेक मिलता है। पवित्र आत्मा के अभिषेक का फल - निर्भीकतापूर्वक साक्षी देना, पापों पर विजय पाने की शक्ति, पवित्र आत्मा का मधुर सहचार्य, दिव्य आराम और आध्यात्मिक वरदानों की पूर्ण अभिव्यक्ति शामिल हैं।

अपनी सारी समस्याओं को हल करने के लिए अपने अंदर पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करें और जीवन भर अच्छे स्वास्थ्य, शाँति और समृद्धि का आनन्द उठाएँ।

आपको आपके जीवन के 6 क्षेत्रों में समस्याएँ हो सकती हैं। वे 6 क्षेत्र ये हैं:

1. शरीर 2. आत्मा 3. मन 4. परिवार 5. आर्थिक समस्या 6. शैतान के बंधन

इन 6 क्षेत्रों में आपको चँगाई और मुक्ति की आवश्यकता है। पवित्र आत्मा को प्रज्वलित कर केइन 6 क्षेत्रों की समस्याओं से आप मुक्ति एवं चँगाई पा सकते हैं।

इस पुस्तक की ये प्रार्थनाएँ, पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करने में सहायक होंगी।

पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करे। (2 तिमथी 1:6)

- मत्ती 6:33 'सबसे पहले ईश्वर और उसके राज्य की खोज करो, और ये सब चीजें तुम्हें यूँ ही मिल जाएँगी'
- रोमन 14:17 - ईश्वर का राज्य क्या है? यह पवित्र आत्मा में आनन्दमय जीवन है।
- 1 कुरि. 3:16, 6:19 - 'आप पवित्र आत्मा के मंदिर है'।

तब क्यों पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करने की आवश्यकता है ?

किसी भी व्यक्ति में पवित्र आत्मा इन तीन कार्यों से निष्क्रिय हो जाता है।

- नफरत - दुष्ट आत्मा की उपस्थित से (1 सामूएल 16:14)
- नश्वर पाप और क्षम्य पाप के कारण (योहन 5:16-17) और
- ईश्वर के लिए की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा न करना - उदाहरण - समसोन (न्यायकर्ता 16:19-21) क्योंकि आप पवित्र आत्मा के मंदिर है (1 कुरि. 3:16, 6:19)। इसलिए यह आवश्यक है कि बपतिस्मा द्वारा आपके अंदर जो पवित्र आत्मा की आग सुलगायी गई है उसे प्रज्वलित करें।

बाइबल के 6 पद (वचन) जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का द्योतक(संकेत) हैं।

1. पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करें (2 तिमो. 1:6)
2. पुनर्जन्म (पवित्र आत्मा में) (योहन 3:3-5).
3. पवित्र आत्मा का अभिषेक (1 योहन 2:27)
4. पवित्र आत्मा की परिपूर्णता (प्रेरित 2:4, 4:31)
5. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (प्रेरित 1:5)
6. पवित्र आत्मा में बढ़ते जाना (लूक 2:52)

पवित्र आत्मा का निरन्तर अभिषेक

- उत्पत्ति ग्रंथ 2:7 - प्रभु ने आदम के नथनों में प्राण वायु फूँक दी।
- योएल 2:28, प्रेरित 2:28 - अभिषेक की सामान्य प्रतिज्ञाएँ, अन्तिम कहने का मतलब समय याने ख्रीस्त के आने के बाद (इब्रानियों 1:1)
- योहन 1:33, लूकस 3:16 - येसु तुम्हें आग और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देंगे।
- योहन 20:23 - येसु ने उन पर फूँक कर कहा - पवित्र आत्मा ग्रहण करो।
- लूक 24:49 - प्रेरित 1:4 - तुम लोग शहर में तब तक बने रहो जब तक ऊपर की शक्ति से सम्पन्न न हो जाओ।
- प्रेरित 1:5 और 8 - थोड़े ही दिनों में तुम पर पवित्र आत्मा उतरेगा, और तुम समारिया, येरूसालेम और दुनिया के अंतिम छोर तक मेरे साक्षी होंगे।
- प्रेरित 2:1-4 - पेंतेकोस्त के दिन वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए।
- प्रेरित 2:38 - आप और आपकी संतान पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त करेंगे।
- प्रेरित 4:31 - सबके सब, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए।
- प्रेरित 10:44-48 - गैर यहूदियों को भी पवित्र आत्मा का वरदान मिला है।
- प्रेरित 19:1-7 पवित्र आत्मा से अभिषिक्त व्यक्ति, जिस पर हाथ रखकर प्रार्थना करता है, उसे भी पवित्र आत्मा का वरदान मिलता है।

पवित्र आत्मा के अभिषेक का प्रयोजन

- तुम मुझसे भी महान् कार्य करोगे। क्योंकि मैं तुम्हारे पास नहीं हूँ। मैं पिता के पास जा रहा हूँ (योहन 14:12)
- सबके कल्याण के लिए (1 कुरि. 12:7) कलीसिया के निर्माण और धर्मप्रचार कार्य के लिए औजार (उपकरण) है।
- पवित्र आत्मा तब तक अपना चमत्कारिक कार्य करता रहेगा जब तक सब ख्रीस्त के ज्ञान की परिपूर्णता तक पहुँचकर ख्रीस्त में एक न हो जाएँ। जब तक हम विश्वास तथा ईश्वर के पुत्र के ज्ञान की परिपूर्णता में एक न हो जाएँ (एफे. 4:11-12)। क्योंकि मसीह में ईश्वरीय तत्व की परिपूर्णता अवतरित होकर निवास करती है। (कलो. 2:9)।
- सम्पूर्णता के लिए: एक कलम तभी उत्तम मानी जाती है, जब यह अपना उद्देश्य (लिखने का काम) पूरा करती है। इसलिए तुम पूर्ण बनों क्योंकि तुम्हारा स्वर्गिक पिता पूर्ण है (मत्ती 5:48)।
- कलीसिया में कार्य पूरा करने के लिए, (लूकस 4:18) उसने मेरा अभिषेक किया है उसने मुझे भेजा है जिससे में दरिद्रों को सुसमाचार सुनाऊँ। (प्रेरित 1:8) जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, तुम संसार के अंतिम छोर तक मेरे साक्षी बनोगे।
- येसु की महिमा के लिए (योहन 16:14)। (वह मुझे महिमान्वित करेगा)

पवित्र आत्मा के अभिषेक के 13 लाभ

1. ईश्वर और मानवजाति के प्रति हमारे संबंध में बदलाव आएगा। ईश्वर हमारा असली पिता है (रोमियों 8:14-17) और माँ है (इसायाह 66:13) और बाकी सब (CCC 370) ख्रीस्त में हमारे भाई-बहन हैं।

1. (1 तिमो. 5:1-2)। येसु हमारा मुक्तिदाता (प्रेरित 4:12), और पवित्र आत्मा हमारा सच्चा सहायक है (योहन 15:26)।

2. येसु ईश्वर है। हम मुख से स्वीकार करेंगे कि येसु ही प्रभु है (1 कुरि. 12:3)। पवित्र आत्मा की प्रेरणा के बिना कोई भी यह नहीं कह सकता कि येसु ही प्रभु है। यदि आप मुख से यह स्वीकार नहीं करते कि येसु ही प्रभु है तब आपको मुक्ति नहीं मिलेगी। (रोमन 10:9)

3. विश्वास के द्वारा चमत्कार होगा (मारकुस 16:17-18) सब के लाभ के लिए जो उल्लेख किया गया है, उनमें से पाँच चीजें आप कर सकते हैं। तुम पर्वत को उठाकर फेंक सकते हो (मारकुस 11:23).

4. आप धर्मग्रंथ, कलीसिया की शिक्षा और रीतियों को बिना परेशानी के सीख सकेंगे। पवित्र आत्मा तुम्हें सब कुछ सिखाएगा। (1 योहन 2:27, योहन 14:26)

5. पवित्र आत्मा के वरदान (इसा. 11:2), फल (गलातियों 5:22-23) और लौकिक वरदान (1 कुरि. 12:8-12, एफे. 4:11) प्राप्त कीजिए।

6. आप सहज ही अपने प्रभु ईश्वर को अपने सारे हृदय, सारी आत्मा और सारी शक्ति से प्यार कर सकेंगे। (विधि-विवरण 6:5) जो लोग ईश्वर को प्यार करते हैं, ईश्वर उनके कल्याण के लिए सभी बातों में उनकी सहायता करते हैं। (रोमन 8:28).

7. तुम्हारी स्मरण शक्ति बढ़ेगी। पवित्र आत्मा सब कुछ समझा देगा और जो कुछ मैने सिखाया है, उनका स्मरण दिलाएगा (योहन 14:26)।

8. जीवन के लक्ष्य का ज्ञान मिलेगा (मत्ती 16:24-26)। अपनी आत्मा को बचाने के लिए, अपना क्रूस उठाकर ख्रीस्त का अनुसरण करो।

9. क्षमा करने की शक्ति मिलती है। आप तिरस्कार को नही भूल सकते पर उन्हें बिना पीड़ा के याद करेंगे। पवित्र आत्मा के द्वारा ईश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उमड़ पड़ा है। (रोमन 5:5)। हम दूसरों को उसी तरह प्यार कर सकेंगे जैसा कि ईश्वर उन्हें प्यार करते हैं।

10. हम आनन्द और शांति का अनुभव करेंगे। आंतरिक चँगाई मिलेगी। तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा (योहन 16:20)।

11. प्रार्थना करने का स्वरूप (तरीका) बदल जाएगा। आप विभिन्न रीति से प्रार्थना करेंगे। लम्बी प्रार्थना आपको नीरस नहीं लगेगी (रोमियों 8:26)।

12. चँगाई मिलेगी और आत्मा का कायाकल्प होगा (नया हो जाएगा)। यदि चंगाई नहीं मिलती है तब भी आप, पीड़ा में भी आनन्दित रहेंगे (आनन्द का अनुभव करेंगे) (2 कुरि. 12:9) - तुम्हारी दुर्बलता में मेरा सामर्थ्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है।

13. आपको व्यापार, व्यवसाय, अध्ययन, सेवकाई, पारिवारिक जीवन आदि सभी क्षेत्रों के कार्य में सफलता मिलेगी।

पवित्र आत्मा को प्रज्वलित करने के नौ तरीके

1. पश्चात्ताप : (मारकुस 1:15)। ईश्वर का राज्य निकट आ गया है। सुसमाचार में विश्वास करके और पश्चात्ताप करके इसमें प्रवेश करो। सच्चा पश्चात्ताप और उदारतापूर्वक दान-धर्म, पाप के सभी दंड को रद्द कर देता है (CCC 1472)।

2. मेल-मिलाप : प्रेरित 8:21-23। जब तक तुम अपनी दुष्टता पर पश्चात्ताप नहीं करते, अपना हृदय निष्कपट नहीं बनाते, पवित्र आत्मा के वरदान पर तुम्हारा कोई भाग या अधिकार नहीं है।

3. येसु में विश्वास: योहन 7:37-39। विश्वास करने वालों के अंतस्तल से संजीवन जल की नदियाँ बह निकलेंगी। (प्रेरित 2:38-39)। पवित्र आत्मा का वरदान, आपके, तथा आपकी संतान के लिए है, और उन सबके लिए जो अभी दूर है। योहन 1:12 जितनों ने, उसे अपनाया और जो उसके नाम में विश्वास करते हैं उन सबों को उसने ईश्वर की संतति बनने का अधिकार दिया है।

4. प्रार्थना: कलीसिया की शिक्षा के अनुसार प्रार्थना करें। प्रार्थना के 6 तरीके अपनाएँ - जैसे आशीर्वाद की प्रार्थना, आराधना, याचिका, मध्यस्थ प्रार्थना, धन्यवाद और महिमागान (CCCC 550-556) और इन तीन प्रकार से भी प्रार्थना कर सकते है - मुखर प्रार्थना, ध्यान प्रार्थना तथा मनन-चिंतन करते हुए ध्यान की चरण सीमा (या पराकाष्ठा) तक पहुँचें (CCCC 569-571)। क्योंकि प्रार्थना से ही त्रियेक ईश्वर से हमारा पुत्रोचित संबंध होता है और हमारी सारी इच्छाएँ और दुआएँ (अर्जियाँ) पूरी होती हैं। (CCCC 534)

5. ईश्वर के वचन और कलीसिया की शिक्षा के अनुरूप जीवन जीने का प्रयास करें। प्रेरित 10:44-48, योहन 20:30, CCCC 19)।

6. संस्कार-विशेष कर पवित्र मिस्सा और पाप स्वीकार (CCCC146), लूकस 3:21। हमारे प्रभु येसु का बपतिस्मा, पवित्र तेल का (मलन) अभिषेक, 1 समूएल 10:1 (साऊल) और 1 समूएल 16:13 (दाऊद)।

7. दया करो और दयालु बनो (लूक 6:36, मत्ती 5:7)। संत फौस्टीना ने कहा है - यदि आप प्रार्थना और कर्म द्वारा दूसरों पर दया करते हैं, तब आपको अलौकिक वरदान मिलेगा। दया के 14 काम करे। (CCCC परिशिष्ट बी)

8. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति जिन पर हाथ रखकर प्रार्थना करता है, उन्हें पवित्र आत्मा मिलता है। (प्रेरित 8:17, 19:6 - CCCC 265, 2 तिमो. 1:6).

9. दुःखभोग : (लूकस 12:50) येसु दुःख भोग को मानवता की मुक्ति के लिए, बपतिस्मा का प्रतीक मानते हैं। 2 कुरि. 9:12 - पौलुस के लिए दुःख भोग ईश्वर के रहस्योद्घाटन और पुनर्जीवित ख्रीस्त के सामर्थ्य की अभिव्यक्ति है। (रोमन 8:28) जो ईश्वर को प्यार करते हैं, उनके लिए सारी पीड़ाओं को, ईश्वर उनके कल्याण में बदल देंगे। CCCC 57 - प्रभु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी, रूप में कष्ट नहीं देता है। CCCC 72 ईश्वर की मूल योजना में मनुष्य के लिए कोई दुःखभोग या मृत्यु नहीं है। CCC - 418 - दुःखभोग, पीड़ा, मृत्यु, शक्ति- हीनता, अज्ञानता, काम-वासना, ये सभी आदि पाप के परिणाम है।

दुःख, मृत्यु, अज्ञानता, कमजोर चरित्र और काम-वासना ये सभी आदि पाप (मूल) के संसारिक दंड है, जो बपतिस्मा द्वारा रद्द नहीं हुए हैं। CCCC 1521 - दुःख भोग, पीड़ा आदि पाप का परिणाम है। GS 13 - मानव के बहुत से दुःख, ईश्वर हमारे भले सृजनहार की ओर से नहीं हैं। ईश्वर की कृपा और ख्रीस्त पर विश्वास करते हुए, सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना द्वारा कोई भी इन पीड़ा के बधनों से मुक्ति पा सकता है। CCC 2448 - मानव दुःखों पर तरस खाकर येसु ने सारी पीड़ाओं को अपने शरीर में ले लिया और मानवता को उनके सारे दुःखों से मुक्त किया। जो उन पर विश्वास करते हैं - वे अपने दुःखों से मुक्ति पा सकते हैं। CCC 311 - ईश्वर कभी पीड़ा नहीं देते लेकिन इसकी अनुमति देते हैं। भले बुरे का चयन करने की स्वतंत्रता बुराई की जड़ है। CCC 312 यदि हम ईश्वर में धैर्य पूर्वक कष्ट सहते और ईश्वर की दुहाई देते हैं तो ईश्वर हमारे सारे दुःखों को, ईश्वर की महिमा और हमारे कल्याण में बदल देंगे। CCCC 314 चँगाई ईश्वर के राज्य का चिन्ह, है फिर भी कोई मानव के दुःखों के प्रतिनिधिक पहलुओं को रद्द नहीं कर सकता है, तब दुःखभोग स्वयं के शुद्धीकरण, मुक्ति और दूसरों की मुक्ति के लिए हैं। (कलो. 1:24)

करिश्माई नवीनीकरण आन्दोलन में सेवाएं

पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, पवित्र कलीसिया की सेवा एवं विभिन्न सेवकाई के लिए, पवित्र आत्मा का वरदान मिलता है। (CCCC 160)

1. प्रेरितिक सेवा कार्य - धर्माध्यक्ष
2. पुरोहिताई
3. धार्मिक / समर्पित लोगों की सेवकाई
4. सुसमाचार प्रचारक - 1 कुरि. 9:16, रोमन 10:15। सुसमाचार सुनाने वालों के चरण कितने सुंदर लगते हैं।
5. सलाहकार / परामर्शदाता - प्रवक्ता 25:4-5
6. मध्यस्थ प्रार्थना - 1 तिमो. 2:1-3
7. शारीरिक चँगाई की सेवकाई - मारकुस 16:18 मानव शरीर ईश्वर का मंदिर - 1 कुरि. 3:16 उसे चँगाई मिलनी चाहिए। कुछ लोगों को ईश्वर ने चँगाई का वरदान दिया है। (CCC 1508)
8. आंतरिक चँगाई की सेवकाई।
9. मुक्ति दिलाने की सेवकाई - लूकस 13:10-17
10. आर्थिक समस्याओं से मुक्ति की सेवकाई - योशुआ 1:8, विधि-विवरण 28:1-4
11. पारिवारिक चँगाई की सेवकाई - प्रेरित 16:31 & 37
12. स्वयंसेवक - पल्ली, साधना केन्द्र, आदि संस्थाओं में।
13. कटेकिसम के शिक्षक।
14. प्रार्थना सभा, बाइबिल सम्मेलन, साधना आदि का आयोजन करना।
15. सेवा संस्थान - वृद्ध आश्रम, निराश्रित स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, भोजन (खाद्य पदार्थों) का वितरण।
16. संगीत सेवा कार्य या स्तुति एवं आराधना - 2 राजाओं 3:15

17. साक्षी (गवाही देना) - प्रेरित 1:18)

18. प्रोत्साहित करना - लोगों को साधना केन्द्र में, साधना में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना। (याकुब 5:20)

19. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा सेवकाई, साहित्य, श्रव्य, दृश्यश्रव्य तथा बाइबिल का वितरण।

20. दान - समय, क्षमता-प्रतिभा और सम्पत्ति का दान करना। (फिलि. 4:16-20, मलआकी 3:8-10, उत्पत्ति 14:17)

सेवकाई के लिए तीन चीजों का होना आवश्यक है:

1. दमति इच्छा या लालसा - 2 कुरि. 5:14, ईश्वर का प्यार हमें बाध्य करता है।

2. कलीसिया द्वारा पारित - गलातियों 2:1-10, (धर्माध्यक्ष / पुरोहित) रोमन 13:1, इब्रानियों 13:17

3. सेवकाई (मिनिस्ट्री) के अच्छे परिणाम निकलें। मत्ती 7:17, योहन 15:26

पवित्र आत्मा के अभिषेक में बाधाएं(रुकावटें)। (CCC अनुबंध B)

1. अहंकार
2. लोभ
3. वासना
4. क्रोध
5. पेटूपन
6. डाह (ईर्ष्या)
7. आलस
8. पर्यावरण प्रदूषण

पवित्र आत्मा को प्रतिदिन प्रज्वलित करने के लिए (प्रतिदिन अष्टांगा प्रार्थना), दूत संवाद (दूत संवाद प्रार्थना) के बाद (पृ.सं. 2)

I.	समर्पण की प्रार्थना	15
II.	सबके लिए प्रार्थना	18
III.	संरक्षण और मुक्ति (छुटकारा पाने) की प्रार्थना	18
IV.	पाँच व्यक्तिगत प्रार्थना, करूणा की माला विनती द्वारा।	23
V.	रोजरी की माला विन्ती	31
VI.	दैनिक सुसमाचार (बाईबिल डायरी) पढ़ना	31
VII.	पाँच मिनट मनन करना	31
VIII.	पवित्र मिस्सा पूजा में भाग लेना	32

I. समर्पण की प्रार्थना

(सभी चीजों को दिव्य करूणा की मंजूषा में चढ़ा दें, उत्पति 8:1 ईश्वर ने नोवा को याद किया, और बाढ़ सूख गया।)

हे येसु, मैं अपने शरीर, आत्मा, मन, मेरे सभी निवेदन (30 निवेदन और यदि कोई दूसरे), परिवार के सदस्य, सगे-संबंधी, मित्र, दुशमन, मेरा देश, सारी दुनिया, ब्रह्माण्ड तथा इसमें निहित सारी चीजों को, आपके पवित्र हृदय, माता मरियम के निष्कलंक हृदय, तथा ईश्वरीय दया की मंजुषा में अर्पण करता हूँ।

तीस निवेदन (याचिकाएँ)

दुनिया के लिए

1. पश्चाताप का वरदान
2. मेल-मिलाप का वरदान
3. येसु-ख्रीस्त में विश्वास का वरदान।
4. प्रार्थना करने का वरदान
5. पवित्र आत्मा का अभिषेक
6. प्रार्थना की सभी याचिका पूरी हो।
7. येसु के समान, दयालु हृदय और मन पाने के लिए (भला समारी बनने के लिए)

एक व्यक्ति के लिए

1. येसु के लहू द्वारा पापों की क्षमा मिले।
2. शैतान के सभी बंधनों से छुटकारा पाने के लिए।
3. सभी 6 क्षेत्रों में चँगाई के लिए (शरीर, मन, आत्मा, परिवार, आर्थिक समस्या और शैतानिक बंधन)
4. पवित्र आत्मा का अभिषेक
5. सभी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने के लिए।
6. येसु ख्रीस्त की साक्षी (गवाही) देना ।
7. येसु के बारे में दूसरों को बताना (प्रचार करना)।

8. दूसरों के प्रति दयालु दृष्टिकोण रखने के लिए
9. परिवार के मृत जनों की आत्माओं की मुक्ति के लिए।
10. अनंत जीवन पाने के लिए।

पुरोहितों और धर्म संधियों के लिए

1. मूसा के समान लोगों की अगुवाई करना
2. एलिजा की (के समान) तरह प्रार्थना करें और उत्साही बनें।
3. दाऊद की (के समान) तरह प्रशासक बनें।
4. सुलेमान की (के समान) तरह न्यायपूर्वक शासन करें।
5. हमेशा येसु के समान बनें (दूसरा मसीहा बनें)
6. प्रेरितों के समान कलीसिया और संत पिता से एकता बनाए रखें।
7. हमेशा पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलें।

व्यक्तिगत याचिका

1. परिवार के लिए ।
2. बैरियों के लिए ।
3. आंतरिक चँगाई के लिए ।
4. शारीरिक चँगाई और रोग-प्रतिरोधक क्षमता पाने के लिए ।
5. पवित्र आत्मा की परिपूर्णता के लिए।
6. अन्य यदि कोई विशेष मतलब हो तो।

II. सबके लिए प्रार्थना :

(एजेकिएल 36:25-28 : यह सभी जीवधारियों में पूरी हो)

हे स्वर्गीय पिता, अपने पावन जल को, अपने पुत्र येसु-ख्रीस्त के द्वारा, सारे मानवजाति तथा सभी जीवधारियों पर छिड़क दीजिए, जिससे सभी नया हृदय, नई आत्मा, और नया मन प्राप्त कर सकें। इस नए हृदय में, अपनी आज्ञाओं और नीति-विधियों को, अंकित कर दीजिए कि हम एक दूसरे को सच्चे हृदय से प्यार कर सकें। इस प्रकार हम मन, आत्मा, और हृदय से येसु मसीह में संयुक्त हो जाएँगे। हे स्वर्गीय पिता, दुनिया के सभी मनुष्यों पर दया कीजिए (मारकुस 10:46-50)। हे येसु हमारे मुक्तिदाता, सभी को आग और पवित्र आत्मा (मती 3:11) का बपतिस्मा दीजिए। हे पवित्र आत्मा सभी की सहायता कीजिए, कि सब ईश्वर के वचनों (योशुआ 1:8, स्तोत्र 104:30, लूकस 1:35) तथा कलीसिया की शिक्षा के अनुसार, जीवन जी सकें।

III. संरक्षण की प्रार्थना और छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना

संरक्षण की प्रार्थना

हे येसु, अपने पवित्र क्रूस की छाया में मुझे संरक्षण दीजिए। अपने अनमोल घावों के अंदर, मुझे छुपा लीजिये। मुझ पर, मेरे परिवार

पर, सभी जीवधारियों और ....., ..., ...उन सभी वस्तुओं पर, .., ..., ...जो मुझे प्रिय हैं, अपना बहुमूल्य रक्त छिड़क दीजिए। माता मरियम, मुझे, मेरे परिवार को, मेरे सभी बहुमूल्य वस्तुओं को, अपने लबादे से ढक दीजिए। संत मिखाएल, सभी प्रेरित गण, सब संतो और शहीदो, मेरे लिए प्रार्थना कीजिए।

छुटकारा पाने के लिए प्रार्थनाः

येसु के नाम पर, ईर्ष्या-द्वेष, डर-भय, क्रोध, बैर, नफरत, अहंकार, वासना, दुःख-दर्द, पुरानी बिमारी ... के दुष्टात्माओ, मैं तुम्हें बांधता हूँ, इसी क्षण मुझमें से निकल कर, येसु के पैरों के नीचे चला जा। हे... रोगों के दुष्टात्मा, मेरे शरीर पर, तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।

मैं तुम्हें येसु के पैरों के नीचे, हमेशा बँधे रहने के लिए, भेज देता हूँ क्योंकि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। जिसने मुझे येसु के पवित्र लहू द्वारा बचाया और मेरा उद्धार किया है। संत मिखाएल, महादूत, सभी प्रेरित गण विशेष कर संत पेत्रुस और संत पौलुस, सभी संतो और शहीदो, विशेष कर संत सेबेस्टियन और संत जोर्ज, मेरे लिए प्रार्थना कीजिए।

हे माता मरियम, अपनी शक्तिशाली प्रार्थना द्वारा, मेरे लिए मध्यस्थता कीजिए। येसु मुझे कृपा दीजिए, कि मैं आपके, मुक्ति की

परिपूर्णता का अनुभव कर सकूँ। हे पवित्र आत्मा आकर, अपने सामर्थ्य से मुझे भर दीजिए।

येसु मुझे शैतान की दासता, हर तंत्र-मंत्र, अभिशाप, दुःख तकलीफ, एवं शैतान की हर चाल और बंधन से, इसी क्षण मुक्त कर दीजिए।

दिव्य करुणा की माला विनती

पाँच दशकों की साधारण रोजरी माला का उपयोग कर दिव्य करुणा का पाठ किया जाता है।

शुरुआत प्रार्थना:

हे अतिमधुर येसु, तूने मानव जाति के उद्धार के लिए मृत्यु को गले लगाया। इसी के द्वारा आत्माओं की मुक्ति के लिए जीवन का स्त्रोत फूट निकला है और तेरे पवित्र हृदय से सारी मानव जाति के लिए दया का सागर उमड़ पड़ा है। हे जीवन के स्त्रोत, अथाह ईश्वरीय दया, सारी दुनिया को अपनी करुणा से ढक ले और अपना सर्वस्व हमारे लिए अर्पित कर। येसु के पावन हृदय से हमारे लिए दया के स्त्रोत के रूप में बह निकले, हे रक्त और जल, मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

प्रभु की विनती:

हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र किया जाए, तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में है, वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो । हमारा प्रतिदिन का आहार आज हमें दे, और हमारे अपराध हमें क्षमा कर, जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में न डाल, परन्तु बुराई से बचा । आमेन ।

प्रणाम मरियम:

प्रणाम मरियम, कृपापूर्ण, प्रभु तेरे साथ है, धन्य तू स्त्रियों में, और धन्य तेरे गर्भ का फल येसु। हे सन्त मरियम, परमेश्वर की माँ, प्रार्थना कर हम पापियों के लिए, अब और हमारे मरने के समय। आमेन।

प्रेरितों का धर्मसार:

स्वर्ग और पृथ्वी के सृजनहार सर्वशक्तिमान् पिता परमेश्वर पर मैं विश्वास करता हूँ, और उसके एकलौते पुत्र हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त पर जो पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया कुँवारी मरियम से जन्म लिया पोन्तुस पिलातुस के समय दुःख भोगा। क्रूस पर ठोंका गया, मर गया और दफनाया गया। अधोलोक में उतरा, तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे, स्वर्ग गए, और सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर के दाहिने विराजमान हैं। वहाँ से जीवितों और मृतकों का न्याय करने फिर आएँगे।

मैं पवित्र आत्मा पर, पवित्र काथलिक कलीसिया, धर्मियों का संबंध पापों की क्षमा, देह के पुनरूत्थान, और अनन्त जीवन पर विश्वास करता हूँ । आमेन ।

(प्रत्येक भेद के पहले बड़े दाने पर)

हे शाश्वत पिता, हमारे और सारी दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए, तेरे परम प्रिय पुत्र , हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त, के पावन शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता, को मैं तुझे चढ़ाता हूँ।

(प्रत्येक भेद के दस (10) छोटे दानों पर)

प्रभु येसु के दुःखभोग और क्रूस मरण के कारण, अब्बा पिता हम परऔर सारी दुनिया पर दया कर(दस बार)

(के द्वारा समापन करें)

हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्वशक्तिमान, हे पावन अमर ईश्वर, हम पर और सारी दुनिया पर दया कर (तीन बार)

अंतिम प्रार्थना

हे शाश्वत ईश्वर, जिनमें दया अनंत है, जिनकी करुणा का ख़ज़ाना अपार है, अपनी करुणा दृष्टि हम पर डालिए, हम पर अपनी कृपा बढ़ाइए, ताकि कठिन क्षणों में हम निराश न हों पर पूरे विश्वास के साथ आप की पवित्र इच्छा में स्वयं को समर्पित करें, क्योंकि आप की इच्छा ही स्वयं प्रेम और दया है।

IV व्यक्तिगत मतलबों के लिए माला विनती

1. शुरुआत प्रार्थना - 20
2. प्रभु की विनती - 21
3. प्रणाम मरियम - 21
4. प्रेरितों का धर्मसार - 21

माला विनती के द्वारा पांच मतलबों के लिए प्रार्थनाएँ।

1. परिवार के लिए प्रार्थना :

जब परिवार में संकट है और परिवार के सदस्य उपस्थित नहीं हैं या प्रार्थना में रूचि नहीं रखतें हैं – तो एक व्यक्ति की प्रार्थना से पूरे परिवार को मुक्ति मिलेगी। (पढ़ें प्रेरित चरित 16:31)

परिवार के सदस्य जब अनुपस्थित हैं तब परिवार के लिए प्रार्थना कैसे की जाए? (अपने दोनों हाथ फैलाकर मन में ध्यान करें कि आप के परिवार के सदस्य आत्मिक रूप से आप के साथ हैं और आपके फैले हाथों के नीचे घुटने टेक रहे हैं)।

प्रार्थना :

हे येसु मेरी सहायता कर, कि मैं परिवार के प्रत्येक सदस्यों को, प्यार तथा सम्मान दे सकूँ। विशेष कर मेरे जीवन साथी को, वह प्यार और सम्मान दे सकूँ जैसा वे मुझसे अपेक्षा रखते हैं। वे भी मुझे वही प्यार और सम्मान दें, जैसा मैं उनसे अपेक्षा रखती हूँ। हमें पवित्र आत्मा से भर दीजिए, कि हम मन, हृदय और आत्मा से एक हो जाएँ। हमारे परिवार के सदस्यों के बीच, आपकी शाँति और एकता प्रदान कीजिए। येसु मेरे परिवार के सदस्यों के लिए, जो निवेदन मैं आपको चढ़ाती हूँ, उन्हें पूरा कीजिए।

हे शाश्वत पिता, हमारे और सारी दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए, तेरे परम प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त, के पावन शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता, को मैं तुझे चढ़ाता हूँ। (अब दिव्य करुणा की माला विनती का पहला भेद आरम्भ करें।)

प्रभु येसु के दुःखभोग और क्रूस मरण के कारण / अब्बा पिता हम पर और, सारी दुनिया पर और मेरे परिवार पर दया कर ।..

(इसके द्वारा समापन करें) हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्व शक्तिमान, हे पावन अमर ईश्वर....

2. बैरियों के लिए प्रार्थना

(अपने हाथ फैलाएं और मन में सोचें कि आपके सब बैरी आपके समक्ष खड़े हैं और आप नीचे बताई गई प्रार्थना करें / पढ़ें)

प्रार्थना: येसु मेरे बैरियों को, और उनके परिवार को, मुझसे और मेरे परिवार से, अधिक आशीष दीजिए। उन्हें अपनी पवित्र आत्मा से भर दीजिए, कि वे आज से, मेरे हित और पक्ष में रहें ।

हे शाश्वत पिता, हमारे और दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए, तेरे परम प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु येसु ख़्रीस्त के, पावन शरीर और रक्त , आत्मा और ईश्वरीयता को मैं तुझे चढ़ाता हूँ ।

(अब दिव्य करुणा की माला विनती का दूसरा भेद आरम्भ करें।)

प्रभु येसु के दुःख भोग और क्रूस मरण के कारण/अब्बा पिता, हम पर, सारी दुनिया पर, और मेरे शत्रुओं पर दया कर ।....

(इसके द्वारा समापन करें)

हे पावन ईश्वर, हे पावन सवशक्तिमान,..

3.आंतरिक चँगाई के लिए प्रार्थना

(अपनी छाती से आधे फीट की दूरी पर अपने दोनों हाथ एक दूसरे पर रखकर क्रूस का रूप बनाएँ। मूसा ने लकड़ी का टुकडा पानी पर मारा, और पानी मीठा हो गया। इसी प्रकार क्रूस का सामर्थ्य हमारे कड़वे अनुभव तथा यादों को मधुर बना देता है। आप मन में ध्यान करें कि क्रूस से फूटती हुई सफेद किरणें आपके हृदय पर पड़ रही हैं, जहाँ सभी कड़वाहट का भंडारण हुआ है। ये सामर्थ्य से भरी किरणें आपको आंतरिक चँगाई प्रदान करती हैं जिसकी आपको जरूरत है।)

प्रार्थना: हे येसु जैसा तू कल था, वैसा ही आज भी है और सदा रहेगा। येसु मेरे बीते जीवन में आइए। मेरी घायल भावनाओं और नाकारात्मक घटनाओं को, मेरे हित और कल्याण में बदल दीजिए। दुःख, भय, चिंता, असफलता, अकेलापन, अक्षमाशीलता, तिरस्कृत आदि भावनाओं तथा, नाकारात्मक घटनाओं के कारण, मेरे अंदर कटुता है। येसु मेरे कटु अनुभव में आइए, और इन्हें मधुर याद में बदल दीजिए। मैं उन सभों को क्षमा करता हूँ, जिन्होंने अन्यायपूर्वक मुझे दुःख पहुँचाया है और उनके लिए प्रार्थना भी करता हूँ, कि आप उन्हें मुझसे अधिक आशीष दीजिए।

हे शाश्वत पिता, हमारे और सारी दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए तेरे परम प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त के, पावन शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता को, मैं तुझे चढ़ाता हूँ ।

(अब दिव्य करुणा की माला विनती का तीसरा भेद आरम्भ करें।)

... प्रभु येसु के दुःखभोग और, क्रूस मरण के कारण/- अब्बा पिता हम पर, सारी दुनिया पर और मेरे आंतरिक चोटों / (घावों) पर दया कर।...

(इसके द्वारा समापन करें) हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्वशक्तिमान,...

4.शारीरिक चँगाई पाने के लिए प्रार्थना:

(अपने दोनों हाथ क्रूस के रूप में छाती पर रखें या जहाँ बीमारी है वहाँ पर हाथ रखकर चँगाई के लिए प्रार्थना करें। आपको चँगाई / रोग प्रतिरोधक क्षमता या पीड़ाओं को आनन्दपूर्वक सहन करने का वरदान मिलेगा।)

प्रार्थना: येसु आप घायल आरोग्य हैं। येसु मुझे चँगा कीजिए। अपने घावों के द्वारा, मुझे इसी क्षण चँगाई प्रदान कीजिए। येसु आपने कलवारी पर, जो बहुमूल्य रक्त बहाया, उसके द्वारा मेरे सभी पापों को, तथा मेरे प्रथम माता- पिता (आदम-हेवा) के द्वारा, जो पापों का बोझ मुझ पर उतरा है, उन्हें क्षमा कीजिए। अपने पुनरूत्थान के सामर्थ्य द्वारा, मुझे पवित्र आत्मा से भर दीजिए।

1. आज मेरे (तुम्हारी/उसकी) दुर्बलताओं और कष्टों का, आखिरी दिन है। (लूकस 19:10)

2. मैं (तुम/वह) शीघ्र ही, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाऊँगा (जाओगे / जाएगा)। (प्रेरित चरित1:5)

3. और मैं (तुम/वह) नई सृष्टि बन जाऊँगा (जाओगे/जाएगा)। (कुरिन्थियों के नाम दूसरा पत्र 5:17) इस नई सृष्टि में पुरानी दुर्बलताएँ और पीड़ाएँ नहीं रहेंगी।

4. स्वर्गीय पिता मुझ (उन/उस)पर दया कीजिए। (संत मारकुस 10:46-50)

5. येसु मुझे (उसे/उन्हें) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दीजिए। (संत मत्ती- 3:11)

6. पवित्र आत्मा, मुझे (उसे/उन्हें) येसु के वचनों के अनुसार,तथा कलीसिया की शिक्षा के अनुसार, जीवन जीने में मेरी (उनकी/उसकी) अगुवाई कीजिए। जिससे याशुआ 1:8 में जो प्रतिज्ञा है, वह मुझमें (उसमें/उनमें) पूरी होवे ।

7. दुर्बलताओं तथा सभी कष्टों की आत्माओ, येसु के नाम पर मैं (वह) तुम्हें बाँधता हूँ, (है) और आदेश देता हूँ , इसी क्षण मुझसे (उससे/उनसे), निकलकर येसु के पैरों के नीचे चला जा । (संत मारकुस 16:17-18)

8. हे शैतानी शक्तियों, तुम येसु के पुनरागमन तक, येसु के पैरों के नीचे बंधे रहो। (प्रकाशना ग्रंथ 22:20) दुष्टात्माओ येसु तुम्हें फटकारते हैं।

9. मैं (वह/तुम) येसु के घावों द्वारा चंगा हो गया हूँ (है / हो)। (संत पेत्रुस का पहला पत्र - 2:24) येसु के लहू द्वारा, मेरे (तुम्हारे / उसके) पापों की क्षमा मिल गई है। (इब्रानियों के नाम 9:22)

10. येसु के पुनरूत्थान के सामर्थ्य द्वारा, मैं (वह / तुम) पवित्र आत्मा की शक्ति से परिपूर्ण हो गया हूँ (है / हो)। (एफ़ेसियों के नाम 1:19-21, एफेसियों के नाम 2:4-6)

हे शाश्वत पिता, हमारे और सारी दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए तेरे परम प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त के, पावन शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता को, मैं तझे चढ़ाता हूँ ।

(अब दिव्य करुणा की माला विनती का चौथा भेद आरम्भ करें।)

....प्रभु येसु के दुःखभोग और, क्रूस मरण के कारण/

अब्बा पिता, हम पर , और सारी दुनिया पर और मेरी बीमारी पर दया कीजिए...

(इसके द्वारा समापन करें)

हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्वशक्तिमान.....

5.पवित्र आत्मा का अभिषेक पाने के लिए प्रार्थना

(अपने दोनों हाथ उपर उठाकर पवित्र आत्मा का अभिषेक के लिए प्रार्थना करें।)

प्रार्थना: हे ईश्वर, हमें अपनी पवित्र आत्मा से भर दीजिए। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, हमें पवित्र आत्मा के सात वरदान, बारह फल और नौ दिव्य वरदान प्रदान कीजिए। ताकि पवित्र आत्मा के द्वारा हम येसु मसीह के साक्षी बन सकें, और घोषणा कर सकें, कि येसु ही ईश्वर हैं।

हे शाश्वत पिता हमारे और सारी दुनिया के पापों के प्रायश्चित के लिए, तेरे परम प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त के, पावन शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता को मैं तुझे चढ़ाता हूँ ।

(अब दिव्य करुणा की माला विनती का पाँचवां भेद आरम्भ करें।)

प्रभु येसु के दुःखभोग और क्रूस मरण के कारण/अब्बा पिता, हम पर, सारी दुनिया पर, और मेरे निवेदन पर दया कर।...

(इसके द्वारा समापन करें)

हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्वशक्तिमान.....

अंतिम प्रार्थना - पृ.सं. 23

V अपने और दूसरों के मतलबों के लिए माता मरियम की (रोजरी) माला विनती

प्रत्येक भेद के लिए मतलब,

1. सभी परिवार के कल्याण के लिए, तथा परिवार के सदस्य एक दूसरे का आदर और सम्मान करें।
2. हर एक जन पश्चात्ताप करके मेल-मिलाप कर सके।
3. हर एक जन पवित्र आत्मा का अभिषेक पा सकें।
4. बीमारी से चँगाई पाने के लिए, शारीरिक रूप से विकलांगों तथा लाइलाज बीमारी से चँगाई के लिए।
5. संत पापा, धर्माध्यक्षों, पुरोहितों, उपयाजकों, धार्मिक एवं सुसमाचार प्रचारकों के लिए।

(प्रारंभिक कलीसिया रोजरी (CCC 2678) के बदले 'प्रार्थना समूह' की प्रार्थना करती थी। वर्तमान में कलीसिया रोजरी माला विनती को प्रोत्साहन देती है।)

VI. माला विनती के अंत में उस दिन का सुसमाचार या सुसमाचार का कोई भी परिच्छेद पढ़ें।

VII. सुसमाचार परिच्छेद पर पाँच मिनट मनन करने का अभ्यास करें (CCC 570)

VIII पवित्र मिस्सा पूजा समारोह में भाग लें।

अपने सभी मतलबों के साथ (पृ.सं. 16-17) रोज मिस्सा मै पूजा भाग लें।

यदि यह संभव नहीं है तो उस दिन का 'मेरे पास आओ' नोवेना पढ़ें। आत्मिक रूप से अपने सभी मतलबों को पल्ली वेदी पर रख दें और आध्यात्मिक रूप से मिस्सा में भाग लें। नोवेना पवित्र मिस्सा का प्रतिस्थापन नहीं है।

आध्यात्मिक गहन चिकित्सा केंन्द्र की प्रार्थना (I.C.U Prayer)

जब हम कठिनाइयों, विशेष कर गंभीर समस्याओं या बीमारियों के दौर से गुजर रहे हैं तब इनसे पार लगने के लिए नौ दिन की भावपूर्ण प्रार्थना करना जरूरी है।

1. एक दिन में नौ करुणा की माला विनती।
2. एक दिन में संत मत्ती से लेकर संत योहन के सुसमाचार का नौ अध्याय, अविराम पढ़ें।
3. नौ दिन तक एक घंटा पवित्र साक्रामेंत की आराधना करें।
4. इन नौ दिनों के अंतर्गत इमानदारी से एक पाप स्वीकार करना आवश्यक।
5. नौ दिन लगातार मिस्सा में भाग लें और परमप्रसाद ग्रहण करें।

टूटे दिल की चँगाई के लिए:

आज प्रत्येक जन व्यक्तिगत प्रार्थना की आवश्यकता को गहराई से महसूस करता है। इस गैर ख्रीस्तीय संसार में विश्वासी ख्रीस्तीय बनना भारी होता जा रहा है। जो बोझ से दबे हुए हैं और जिन्हें जीवन बोझ लगता है:

येसु ने कहा है 'मेरे पास आओ,और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।

जब हम पारिवारिक जीवन या व्यावसायिक दुनिया में अनेक कठिनाइयों, विपत्तियों, दुःख दर्द या मानसिक व्यथा के दौर से गुजर रहे होतें हैं, तब हमारी प्रार्थना की भूख और बढ़ जाती है।

येसु हमारे पास आने के लिए रोटी का रूप चुनते हैं, यह रोटी येसु का प्रतीक है।

रोटी गेहूँ से बनती है। रोटी बनने के पहले गेहूँ को पीटा जाता है, तोड़ा जाता है और पीसा जाता है।

येसु जीवित रोटी है जो स्वर्ग से उतर आयी है' ।

येसु को खम्भे पर बांधकर मारा गया, उनका दिल तोड़ा गया और अपमानित करके उसे कुचला गया।

पवित्र साक्रामेंत में उपस्थित येसु का सामर्थ्य उन सभी सेनाओं और पुलिस फौज से अत्यधिक सामर्थ्यवान है जो कभी इकठी हुई हो या कभी मार्च की हो।

यूखरिस्त, पुनरुत्थान के सामर्थ्य से पुनर्जीवित प्रभु है। यह सामर्थ्य उन सब में बहता है जो उनकी यूखरिस्तीय उपस्थिति में आते हैं।

उसका (प्रभु का) वचन 'ढ़ाड़स रखों। मै ही हूँ, डरो मत' (मारकुस 6:50) आज है और सदा रहेगा।

येसु ने हमें जो सबसे बड़ा दान दिया, वह है पवित्र यूखरिस्त, जहाँ वे हर दिन हमारी प्रतीक्षा करते हैं।

पापों की क्षमा कैसे पाये

1. यह निर्णय करें कि फिर से पाप न करें (प्रवक्ता 37:17-18)
2. अब से पवित्र जीवन जियें। (योहन 5:14)
3. अपने बैरियों को क्षमा करें (मत्ती. 6:14-15)
4. क्षति पूर्ति करें (जो नुकसान किया उसकी भरपाई करो) (लूकस. 19:1-10)
5. उपवास विनती करें। (योहन 3:4-5)
6. दान करो (टोवित 4:10-11)
7. पुरोहित के पास जाकर पाप स्वीकार करें (योहन 20:23, याकूब 5:14-16)। CIC 989 - वर्ष में कम से कम एक बार पापस्वीकार करें। CIC-988 - पाप के प्रकार और संख्या। CCCC 305 - परम प्रसाद ग्रहण करने के पहले अवश्य पाप स्वीकार करें, यदि कोई बड़ा पाप हो तो।

सब गैर ख्रीस्तीय पापों की क्षमा के लिए उपर लिखित सिर्फ 6 नंबर तक करें।

संत मिखाएल महादूत से प्रार्थना

हे प्रधानदूत संत मिखाएल, स्वर्गीय सेनाओं के सत्रश्रेष्ठ गौरन्वित नेता, इस अंधकारमय संसार के अधिपतियों, अधिकारियों तथा शासकों और आकाश के दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध हो रहे इस युद्ध में हमारी सहायता कीजिए। (एफेसियो 6:1 - ईश्वर ने जिन आत्माओं को अपने सदृश बनाया और बड़ा मूल्य चुका कर मोल लिया, इन मनुष्यों को शैतान की अधीनता से बचाने आइए)

कलीसिया आपको ही अपना अभिभावक और संरक्षक मानती है, मसीह ने जिन आत्माओं को बचाया है। उन्हें स्वर्ग ले जाने की जिम्मेदारी आपको मिला है। इसलिए शीघ्र ही शैतान को हमारे पैरों तले कुचलने के लिए आप हमारे लिए शाँति के ईश्वर से प्रार्थना कीजिए। शैतान कभी भी मनुष्यों को अपने अधिकार में न कर पाए, और कलीसिया पर अत्याचार न कर पाए। पिता परमेश्वर की दया जल्द ही हम पर उतरे और इसके लिए आप हमारी याचनाओं को सर्वोच्च ईश्वर के सामने पहुँचा दीजिए। शैतान जिसे दुष्ट जानवर और पुरातन सर्प कहते हैं। उसे बाँधकर अगाध गर्त में डाल दीजिए। वह फिर कभी राष्ट्रों को न भटकाए।

(प्रकाशना ग्रंथ 20:2) आमेन।

संत पापा लियो (XIII) तेरहवे की छुटकारे की प्रार्थना

येसु ख्रीस्त हमारे प्रभु और ईश्वर, निष्कलंक कुँवारी मरियम, ईश्वर की माता, संत मिखाएल महादूत, धन्य प्रेरितगण, पेत्रुस और पौलुस, और सभी संतों की मध्यस्त प्रार्थना के सामर्थ्य से (और पवित्र पुरोहिताई के अधिकार से)[1]

हम पूर्ण विश्वास के साथ, शैतान के आक्रमण और धोखे-धड़ी को खदेड़ते हैं। (स्तोत्र 68:1-2) ईश्वर उठता है उसके शत्रु बिखर जाते हैं और उसके विरोधी उसके सामने टिक नहीं पाते हैं। वह उन्हें धुएँ की तरह उड़ा देता है। जिस तरह मोम आग में पिघल जाता है, उसी तरह विधर्मी ईश्वर के सामने नष्ट हो जाते हैं।

V - येसु के क्रूस को देखो - शैतान की फौज भाग जाती है।

R - युदावशी सिंह दाऊद की संतति ने विजय पाई है।

V - तेरी दया हम पर उतरे।

R - जितनी महान आशा हमारी तुझ पर है।

(यदि पुरोहित अपदूत के निष्कासन की प्रार्थना बोलते हैं तो क्रूस (†) का चिन्ह दर्शाता है कि आशिष दिया जाना है। यदि अयाजक यह प्रार्थना बोलते हैं तो चुपचाप से क्रूस का चिन्ह बनाना है)।

अशुद्ध आत्माओं, सभी शैतानी शक्तियों नारकीय दंड के हमलावर सभी दुष्ट सेना, समुदाय, और संप्रदाय तुम जो भी हो, हमारे प्रभु, येसु ख्रीस्त के नाम और सामर्थ्य के द्वारा, हम में से बाहर निकल जाओं।

---

[1] कोष्ठक की प्रार्थना सिर्फ याजक के लिए हैं।

- † ईश्वर की कलीसिया और वे आत्माएँ जिन्हें ईश्वर ने अपने प्रतिरूप बनाया है और निर्दोष मेमना के बहुमूल्य रक्त द्वारा जिनका उद्धार किया है उन्हें मुक्त कर दो।
- † अति धुर्त सर्प तुम मानव जाति को धोखा देकर, कलीसिया पर अत्याचार करके ईश्वर के चुने हुए लोगों को यातनाएँ देकर, उन्हें गेहूँ की तरह फटकने का दुस्साहस मत करो।
- † सर्व्वोच्च ईश्वर तुम्हें आदेश देता है।
- † तुम अपनी धृष्टता के कारण अब भी ईश्वर के बराबर होने का दावा करते हो।

'ईश्वर चाहता है कि सभी मनुष्य सत्य को जानें और मुक्ति प्राप्त करें (1 तिमो. 2:4)।

† पिता परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है।

† पुत्र परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है।

† पवित्र आत्मा परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है।

† ख्रीस्त, ईश्वर का वचन जो मनुष्य बना तुम्हें आदेश देता है।

† उसने हमें बचाने के लिए, ईर्ष्या डाह से बाहर निकालने के लिए।

मरण तक हाँ क्रूस मरण तक आज्ञाकारी बनकर अपने को और ही दीन-हीन बना लिया। (फिली 2:8)

उसने मजबूत चट्टान पर अपनी कलीसिया की नींव रखी

और घोषणा किया कि नरक के द्वार उस पर विजय नहीं होंगे। क्योंकि वे उसमें (कलीसिया) निवास करेंगे 'याद रखों मैं संसार के अंत तक तुम्हारे साथ रहूँगा' (संत मत्ती 28:20)

पवित्र क्रूस का चिन्ह तुम्हें आदेश देता है।

- † ख्रीस्तीय विश्वास का रहस्य भी यही कहता है।
- † परमेश्वर की यशस्वी माँ, कुँवारी मरियम तुम्हें आदेश देती है।
- † वह जिसने अपनी दीनता और प्रथम निष्कलंक गर्भधारण के पल से ही तुम्हारे घमंड को कुचला।

धन्य प्रेरित पेत्रुस और पौलुस और अन्य प्रेरितों का विश्वास तुम्हें आदेश देता है।

- † शहीदों का रक्त, और सभी धर्मनिष्ठ संतों की पवित्र मध्यस्थता तुम्हें आदेश देती है।
- † इस प्रकार कुचले गये दैत्य और पैशाचिक फौज तुम्हें जीवित परमेश्वर के नाम पर
- † सच्चे परमेश्वर के नाम पर
- † पवित्र परमेश्वर के नाम पर
- † और परमेश्वर जिसने संसार को इतना प्यार किया कि अपने एकलौते पुत्र को उसके लिए अर्पित कर दिया, जिससे जो उसमें विश्वास करता है, उसका सर्वनाश न हो, बल्कि उसे अनंत जीवन प्राप्त हो। (संत योहन. 3:16)

मानव जाति को धोखा देना और उन पर अनंत नारकीय दंड का जहर उंडेलना बंद करो। कलीसिया को नुकसान पहुँचाना बंद करो। और उसकी स्वतंत्रता में बाधक मत बनो।

सभी धोखे-धड़ी का अविष्कारक और स्वामी, मनुष्यों की मुक्ति का दुश्मन, चले जाओ। ख्रीस्त को राज्य करने दो। उस पर तुम्हारा

कोई चक्र नहीं चल सकता। येसु के लहू द्वारा, मूल्य चुका कर, पवित्र काथलिक और प्रेरितिक कलीसिया को अर्जित किया गया है।

परमेश्वर के सामर्थ्य हाथों के नीचे झुक जाओ।

जब हम येसु के विस्मयकारी नाम का आह्वान करते हैं, थरथराते हुए भाग जाओ।

जिस नाम से नरक थर्रा उठता है - स्वर्ग के मूल्य, शक्तियाँ और अधिकार इस नाम के अधीन हैं। इस नाम की, केरुबिम और सेराफिम निरंतर स्तुति करते हुए यह कहते हैं -

'पवित्र पवित्र है परमेश्वर, सेनाओं का परमेश्वर

V - हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन

R - और मेरी पुकार तेरे पास पहुँचे

V - प्रभु आपके साथ हो

R - और आपके साथ भी

हम प्रार्थना करे:

हे स्वर्गीय पिता पृथ्वी के ईश्वर, स्वर्गदूतों के ईश्वर, महादूतों के परमेश्वर, धर्मपुरखों के परमेश्वर, नबियों के परमेश्वर, प्रेरितों के परमेश्वर, शहीदों के परमेश्वर, धर्मगवाहों के परमेश्वर, कुँवारियों के ईश्वर, परमेश्वर जिसे मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करने तथा काम करने के बाद विश्राम देने का सामर्थ्य है।

क्योंकि आपके सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं हैं और न ही कोई दूसरा ईश्वर हो सकता है। आप दृश्य और अदृश्य सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता है। आपके राज्य का कभी अंत नही होगा।

हे प्रतापी राजा हम आपको षाष्टांग प्रणाम करते हैं। और दीनतापूर्वक निवेदन करते हैं कि आप अपनी सामर्थ्य से हमें राक्षसी आत्माओं के उत्पीड़न से, शैतान के फंदे से, धोखा-धड़ी से, उग्र-दुष्टता से मुक्त कीजिए।

हे ईश्वर हमें अपनी शक्तिशाली सुरक्षा प्रदान कीजिए कि हम सही सलामत रह सकें। येसु मसीह के नाम पर हम आपसे यह माँगते हैं। आमेन।

हे ईश्वर, हमारी यह प्रार्थना सुन और हमें शैतान के जाल से मुक्त कर, कि कलीसिया शाँति एवं स्वतंत्रतापूर्वक आपकी सेवा कर सके। कलीसिया के सभी शत्रुओं को कुचल दीजिए। हम आपसे निवेदन करते हैं हमारी सुन। (आप जहाँ भी है आप पर आशीष पानी का छिड़काव किया जाता है)।

आंतरिक चँगाई

आंतरिक चँगाई

- आंतरिक चँगाई, प्रार्थना और परामर्श है जिससे व्यक्ति का पवित्रीकरण और रूपांतरण होता है।
- यह अपने लोगों को परिपक्व करने का साधन है।
- यह क्रूसित और पुनर्जीवित येसु ख्रीस्त के जीवन को अपने जीवन में लागू करने की एक प्रक्रिया है और येसु का लहू उन हृदयों को चँगा करता है, जिन्हें पूर्ण चँगाई नहीं मिली है।
- यह मसीह में फलकारी और विजेता बनने में सहायक होता है।
- यह बंधनों से छुटकारा पाने का साधन है।
- प्रार्थना और परामर्श व्यक्ति के जीवन में मुक्ति पाने का कारगर साधन है।
- यह उस आंतरिक कक्ष को शुद्ध करता है, जहां चोट, शंका-भय, उपेक्षा को दफनाया (भंडारण किया) गया है क्योंकि हम इनका या तो मुकाबला नहीं करते या करना नहीं चाहते।

आंतरिक चोट के कुछ परिणाम जो किसी के जीवन को आशिषित होने में बाधक है।

1. अत्याधिक संकोची।
2. डर जैसे परीक्षा का डर, बीमारी का डर, जीव-जन्तुओं का डर, परिणाम का डर, लोगों, जानवरों, छिपकली, कीड़े-मकोड़ो, हवा, पानी, नदी, झील, मेघ गर्जन, वज्रपात, प्रेतात्मा,अपदूत (पिशाच), शैतान, जादूगर, जादू टोना करने वाले, भिखारी, अजनबी से डर, गाड़ी चलाना, तैरना, नहाना, सामान्य यौन संबंधी बातें, विपरीत लिंग, शिक्षक, बच्चों, बुजुर्गो, साधू संतों आदि।
3. चिंता - भविष्य के परिणाम की अनावश्यक चिंता या बिना वजह के भय जो अपेक्षाकृत स्थायी होतें हैं।
4. हमेशा व्यथा में रहना इनसे उबरने में कठिनाई का सामना करना।
5. अकेलापन - उदाहरण मेरा कोई नहीं है, मैं अकेला हूँ।
6. भय - छोटी- मोटी चीजों के लिए अकारण या निराधार भय, जैसे बंद कमरे में बैठने का डर, ऊँचाई का डर, एकान्त स्थान से डर आदि।

7. मैं किसी काम का नहीं हूँ (आत्मसम्मान की कमी)
8. मुझे कोई प्यार नहीं करता
9. सब मुझ से नफरत करते हैं।
10. कोई दोस्त नहीं, बिना कारण सब मेरे विरुद्ध।
11. मन मतलबी।
12. लाजवंती पौधा का स्वभाव, दूसरों के द्वारा सहज ही चोटित होना। (अतिसंवेदन शील)
13. मिलनसार (मेल-जोल) में असमर्थ।
14. अत्याधिक आत्मविश्वास।
15. आत्मविश्वास की कमी।
16. स्टेज (मंच) का डर।
17. हकलाना।
18. मनौदैहिक बिमारी, उदाहरण - जौभी शरीर में कोई विषाक्त जीवाणु का संक्रमण नहीं है फिर भी शरीर में रोग के लक्षण हैं।
19. सब प्रकार की प्रत्युर्जना - उदाः भोजन (खाद्य पदार्थ), धूल गर्दे, ओस, पराग, इत्र (सुगंधित द्रव्य), कपड़ा, सोना, कुछ खास धातू, ठंढा/गर्म पानी, ठंढा/गर्म मौसम, आदि।)
20. संप्रेषण (वार्तालाप) कौशल की कमी।
21. विस्मणशीलता (भूलना)।

22. मनोग्रसित बाध्यता विकार के लक्षण और अनेक मनोवैज्ञानिक बीमारी या विकार रोग।
23. अनैच्छिक कामोत्तेजना के लक्षण।
24. अनिद्रा, अति निद्रा या हमेशा थकान महसूस करना।
25. भयावह सपने (दुःस्वप्न)।
26. एकाग्रता की कमी।
27. कम स्मृति (कमजोर यादशक्ति)।
28. कड़ी मेहनत करने पर भी अच्छे परिणाम न मिलना या कम अंक प्राप्त होना।
29. खाने का विकार - क्षुधा (भूख) का अभाव या अति आहार (ज्यादा खाना)।
30. बच्चे, जीवन साथी या माता पिता से बात करने की असमर्थता।
31. अव्यवहारिक विचारों का संजोए रखना (काल्पनिक विचार)।
32. असुरक्षित महसूस करना।

आंतरिक चोटों के कुछ परिणाम जो पाप की ओर ले जाती है।

1. प्रलोभन, जब सहमत है तो दोषी है। (CCC 2847)
2. अवसाद - आत्महत्या के लिए प्रवृत करता है।
3. गलत कल्पना।
4. आत्महत्या की प्रवृत्ति।
5. गलत फहमी।

6. गलत अर्थ।
7. दूसरों पर भरोसा न करना या हमेशा शंका करना।
8. स्वयं पर दया।
9. सम्मोह (दिवानगी/आसक्ति) ।
10. जानवरों या वस्तुओं के प्रति असामान्य प्यार।
11. गर्म मिजाज, गुस्सा और क्रोध।

कुछ आंतरिक घाव की कुछ अभिव्यक्तियाँ जो पापमय हैं।

1) ईर्ष्या ।
2) अहंकार ।
3) घृणा (नफरत) ।
4) अक्षमाशीलता और टूटे संबंध ।
5) ईश्वर की आज्ञा और कलीसिया की शिक्षा का पालन न करना ।
6) प्रार्थना न कर पाना - प्रार्थनारहित जीवन पाप है (प्रार्थना करने में कठिनाई) ।
7) ईश्वर पर विश्वास न कर पाना - रोमन 14:2 ।
8) झूठी निंदा, या गपशप और अफवाहें फैलाना ।
9) निराशा ।
10) पश्चात्ताप और परिवर्त्तन (रूपान्तरण) करने में मुश्किलता । (बीते पापों के लिए कोई खेद नहीं)
11) डींग मारना ।
12) जुवा, तम्बाकू, शराब और नशीली दवाओं की लत

13) असामान्य यौन व्यवहार: जैसे हस्तमैथुन, पाश्विक, यौनक्रूरता, परपीड़न रति, स्वपीड़ासक्ति, बाल यौन शोषण, वेश्याबृति, अश्लील साहित्य, व्यभिचारी, बहुपत्नित्व, बहुविवाह, रखैल, बलात्कार, दर्शनारति, समलिंग कामी महिला, पुरुष समलिंगी, कामांग प्रदर्शन, अभद्र, संभोग के लिए फुसालाना (प्रलोभन), अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहनना आदि।

14) आरोप

15) स्वयं औचित्य (किसी बात को) सही ठहराना

16) हिंसा या दूसरे को दर्द पहुँचाना

17) पेटूपन

18) आलस्य और काम को टालते जाना

19) ईश निंदा तथा निंदात्मक सोच

20) लोभ, लालच

21) काला जादू या जादू टोना करना।

22) झूठ बोलना या झूठे मनोविज्ञान

23) विलासिता या पैसे की फिजुलखर्ची

24) सम्पत्ति का नुकसान करना या नष्ट करना

25) चोरी - डकैती

26) नशीली दवा, पैसे, यौन की लत

27) गैर जिम्मेदार

28) भाग्यवाद पर विश्वास करना।

29) गुंडागर्दी, क्रूरता नृसंशता, असामाजिक व्यवहार (समाजविरोधी), आतंकवादी, मानव की हत्या, नरसंहार (हिटलर), युद्ध, मार-पीट, जानवरों के प्रति क्रूरता।

आंतरिक घाव या चोट के कारण

1) अनुसुलझे अनुभव
2) उपेक्षित अनुभूति
3) शोक (आघात)
4) नकारात्मक भावनाएँ
5) आहत भावनाएँ
6) पुरखों के कारण / माता पिता के कारण।
7) शैतानी रूप से (पैशाचिक)

उपचार

1) येसु के साथ विकास के पिछले चरणों की ओर चलो।
2) बिना शर्त के क्षमा करना
3) आंतरिक चँगाई का वरदान प्राप्त हुए व्यक्ति के द्वारा आंतरिक चँगाई की आराधना करना।
4) आंतरिक चँगाई की प्रार्थना चालू रखना।
5) संरक्षण और छुटकारे की प्रार्थना
6) प्रार्थना की परिपूर्णता
7) प्रशंसा (स्तूति / आराधना)

आंतरिक चँगाई के लिए बाइबिल के पद

1) योहन 14:1, तुम्हारा जी धबराये नहीं।
2 स्तोत्र 34:18, प्रभु दुखियों से दूर नहीं हैं।
3) पेत्रुस का पहला पत्र 5:7-अपनी सारी चिंताएँ उस पर छोड़ दें।
4) इसायाह 43:5 - डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।
5) स्तोत्र 27:10 - भले ही तुम्हारे माता-पिता तुम्हें भुला दें, मैं तुम्हें नहीं भुलाऊँगा।
6) इसायाह 49:15 - भले ही तुम्हारी माँ तुम्हें भुला दें, मैं तुम्हें नहीं भुलाऊँगा।
7) मत्ती 6:33 - तुम सबसे पहले ईश्वर और उसके राज्य की खोज में लगे रहो और ये सब चीजें तुम्हें यूँ ही मिल जाएँगी।
8) फिलिप्पियों 4:13 - जो मुझे बल प्रदान करता है मैं उसकी सहायता से सब कुछ कर सकता हूँ।
9) गलातियों 2:20 - मैं अब जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझमें जीवित है।
10) मलआकी 4:3 (Eng. Bible), 3:21 (Hindi Bible) - जब ईश्वर मेरे लिए कार्य करता है सारे दुष्ट धूल बनकर मेरे पांव के नीचे होगे।
11) इसायाह 54:17 - तेरे विरुद्ध गढ़ा हुआ कोई शस्त्र सफल नहीं होगा। जो तुझ पर अभियोग लगाता है, तू उसका खंडन करेगी।
12) CCC 370 ईश्वर मेरा आदर्श माता और पिता है वह मुझे प्यार करता है।
13) इसायाह 43:25 / इब्रानियों 8:12 - मैं तुम्हारे पाप फिर याद नहीं करूँगा।
14) इसायाह 43:18 - पिछली बातें भूला दो। पुरानी बातें जाने दो, देखो मैं एक नया कार्य करने जा रहा हूँ।

15) रोमन 8:28 - जो ईश्वर को प्यार करते हैं, ईश्वर उनके कल्याण के लिए सभी बातों में उनकी सहायता करता है।

आंतरिक चँगाई की प्रार्थना

(आसन्न की अनुशंसा (सिफारिश) अपने दोनो हाथों को एक दूसरे के ऊपर रखकर क्रूस बना लें और अपनी छाती से आधे फीट की दूरी पर रखें।)

मूसा ने लकड़ी के एक टुकड़े को कड़वे पानी पर मारा। और यह मीठे पानी में बदल गया। इसी तरह क्रूस का सामर्थ्य हमारे कड़वे यादों और अनुभवों को मधुर याद में बदल देगा। कल्पना करें कि क्रूस से सफेद किरणें आपके हृदय में प्रसारित हो रही हैं, जहाँ सभी कड़वाहटों का भंडारण हुआ है। ये सामर्थ्य से भरी किरणें आपको आंतरिक चँगाई प्रदान करती हैं जिसकी आपको जरूरत है।

प्रार्थना: येसु जैसा तू कल था, आज भी है और सदा रहेगा। येसु आप मेरे बीते जीवन में आइए। मेरी आहत भावनाओं और नकारात्मक घटनाओं को मेरे पक्ष और कल्याण में बदल दीजिए। मैं इन सभी नकारात्मक घटनाएँ जो मेरे जीवन में घटी हैं। उन पर प्रार्थना करता हूँ, और भावनाएँ जैसे उपेक्षित अनुभूति, अक्षमाशीलता, दुःख, भय, अकेलापन, असफलता आदि। मैं इन सब पर लिए प्रार्थना करता हूँ, येसु मेरे कटु अनुभव में आइए और उन्हें मधुर याद में बदल दीजिए। मैं उन सब के लिए प्रार्थना करता हूँ और उन्हें क्षमा करता हूँ जिन्होंने मुझे अन्याय पूर्वक दुःख पहुँचाया है। येसु उन्हें मुझसे अधिक आशीष दीजिए।

दिव्य करुणा की नोवेना

नोवेना के लिए दिव्य करुणा की माला विनती

संत फौस्टिना
(दया की प्रेरित)

संत फौस्टिना कवास्का की डायरी पृ.सं. 476) के अनुसार दिव्य करूणा की माला विनती की नोवेना - रोजरी माला के दानों के द्वारा की जाती है। (पृ.सं. 20)

येसु ने नोवेना के अलावा इस प्रार्थना को फौस्टिना के व्यक्तिगत उपयोग के लिए भी दिया। येसु ने सामर्थ्य से भरी यह प्रार्थना करुणा की माला विनती, संत फौस्टिना को प्रकट किया और उनकी इच्छा थी कि हर एक जन यह दया की माला विनती बोले।

संत फौस्टिना यह माला विनती हमेशा करती थी, विशेष कर मरनासन्न व्यक्ति के लिए करती थी, येसु ने उससे आग्रह किया कि वह दूसरों को भी यह प्रार्थना बोलने के लिए प्रोत्साहित करे।

येसु ने प्रतिज्ञा की, कि जो भी दया की माला विनती की यह विशेष प्रार्थना, जपेगा उसे असाधारण कृपा मिलेगी।

यह माला विनती कभी भी बोली जा सकती है, लेकिन येसु ने कहा कि जब यह नोवेना के रूप में विशेषकर करुणा के पर्व के, नौ दिन पहले की जाएगी तो इस नोवेना (माला विनती) के द्वारा आत्माओं को हर कृपा देने की येसु ने प्रतिज्ञा की है। (डायरी. पृ.सं. 796)

हम यह नोवेना अपने व्यक्तिगत मतलबों के लिए या दिव्य करुणा की नोवेना के समय के प्रतिदिन के मतलबों के लिए जिन्हें हमारे प्रभु ने संत फौस्टिना को समर्पित किया, कर सकते हैं।

दिव्य करुणा की नोवेना

संत फौस्टिना की डायरी के अनुसार (1209-1229) नोवेना के दिन

पहला दिन

'आज सारी मानव जाति को विशेषकर सभी पापियों को मेरे पास लाओ'

हे अति दयालु येसु - आपका स्वभाव हमपर दया और हमें क्षमा करना है। हमारे अपराधों पर ध्यान न दीजिए। बल्कि हमारा भरोसा जो हम आपकी असीम भलाई पर रखते हैं, उस पर ध्यान दीजिए। अपने अति दयालु हृदय के निवास में हमें ग्रहण कीजिए। और यहाँ से कभी भी पलायन (अलग) होने न दीजिए। आपका वह प्यार जो आपको पिता और आत्मा से संयुक्त रखता है उसी प्रेम के नाम पर आपसे यह माँगते हैं। शाश्वत पिता सब मानव जाति पर, विशेष कर पापियों पर अपनी करुणामय निगाहें डालिए। सभी को येसु के दयालु हृदय पर आच्छादित (संलग्न) करते हैं। येसु के दुःखभोग और क्रूस मरण के कारण हम पर दया कर कि हम आपके सामर्थ्यवान दया की प्रशंसा/गुणगान युगों तक कर सकें (आमेन)।

आज मेरे पास पुरोहितों और धर्मसधियों की आत्माओं को लाओ।

हे अति दयालु येसु आप सभी अच्छाई के स्रोत हैं। जिन भाई और बहनों ने अपने को आपकी सेवा के लिए समर्पित किया है। उन्हें अपनी कृपा दीजिये, कि वे उचित रीति से दया अनुकम्पा का काम कर सकें। उनके कामों के द्वारा दयालु पिता जो स्वर्ग में है उनकी महिमा हो सके। पिता, पुरोहितों और धर्मसंधियों की आत्माओं पर जो आपकी दाखबारी में काम करने के लिए बुलाये गये हैं, उनके संगठन पर अपनी करुणामय की निगाहें डालिए। उन्हें आपकी आशीषों का सामर्थ्य प्रदान कीजिए। आपके प्यारे पुत्र जिसके प्यार में वे आच्छादित (संलग्न) है, उन्हें अपनी ज्योति और सामर्थ्य प्रदान कीजिए। ताकि वे दूसरों को मुक्ति की राह दिखा सकें और जीवन के अंत तक तेरी असीम दया की महिमा एवं प्रशंसा कर सकें। आमेन।

आज भक्त और ईमानदार (वफादार) आत्माओं को मेरे पास लाओ।

अति करुणामय येसु, आपका अति चमत्कारिक प्यार जो आपके स्वर्गीय पिता के लिए प्रखरता से जलता है। इसी प्यार के नाम पर आपसे माँगते है कि आप अपनी दया के भंडार से हर एक जन को प्रचुरमात्रा में अपनी कृपा प्रदान कर। अपने अति दयालु हृदय के निवास में हमें स्वीकार कीजिए और यहाँ से हमें पलायन (अलग) होने मत दीजिए।

हे शाश्वत पिता अपनी दया दृष्टि इमानदार (वफादार) आत्माओं पर डाल, जो आपके पुत्र के उतराधिकारी हैं।

येसु के दुखभोग और क्रुस मरण के द्वारा उन्हें अपना संरक्षण और आशीर्वाद प्रदान कीजिए। ताकि वे अपने पवित्र विश्वास में दृढ बने रहें और आपके प्रति उनका प्यार कभी कम न हो बल्कि जीवन के अंत तक सभी दूतों और संतों के साथ आपकी असीम दया की महिमा युगों तक गा सकें। आमेन।

चौथा दिन

आज उन आत्माओं को मेरे पास लाओ जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करती और जो अब तक मुझे नहीं जानती हैं।

अति दयालु येसु आप समस्त संसार की ज्योति हैं। उन आत्माओं को जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करती और जो अब तक तुझे नहीं जानती हैं। उन्हें अपने अति करुणामय, हृदय के निवास में स्वीकार कीजिए। आपके कृपा की किरणें उन्हें ज्योतिर्मान करें, कि वे भी हमारे साथ मिलकर, आपके चमत्कारिक करुणा की प्रशंसा (गुणगान) कर सकें उन्हें अपने अति करुणामय हृदय के निवास से कभी पलायन (अलग) न होने दीजिए।

शाश्वत पिता उन आत्माओं पर दया कीजिए, जो आप पर विश्वास नहीं करती और अब तक आपको नहीं जानती हैं। पर वे येसु के अति करुणामय हृदय से संलग्न है। उन्हें सुसमाचार के प्रकाश में लाइए। ये आत्माएँ आपको प्यार करने में जो आनन्द है उसे नहीं जानती हैं। उन्हें कृपा दीजिए कि अपने जीवन के अंत तक आपके दया की उदारता का गुणगान / प्रशंसा युगों तक कर सकें । आमेन।

पाँचवा दिन

आज मेरे पास उन आत्माओं को लाओ जो मेरी कलीसिया से अलग हो गई हैं।

हे अति करुणामय येसु, आप जो अच्छाई हैं। उन आत्माओं को जो आपकी कलीसिया से अलग हो गयी हैं। उन्हें अपने उदार हृदय के निवास में ग्रहण कीजिए। जो आपके प्रकाश को पाना चाहती हैं उन्हें मत ठुकराइए। उन आत्माओं को जो आपकी कलीसिया से अलग हो गई हैं, अपनी ज्योति से उन्हें कलीसिया की एकता में ले आइए और उन्हें आपके अति पवित्र हृदय के निवास से कभी पलायन (अलग) होने मत दीजिए। ताकि वे भी आपकी दया की उदारता को महिमान्वित कर सकें।

शाश्वत पिता वे आत्माएँ जो आप की कलीसिया से अलग हो गई हैं और अपनी त्रुटियों पर हठपूर्वक बने रहने के कारण आपकी कृपा का दुरुपयोग किया है और आपकी आशीष को गँवा चुके हैं। उनकी त्रुटियों पर ध्यान मत दीजिए, पर आपके प्रिय पुत्र के प्यार और घोर पीड़ा जो उसने उनके लिए भी सहा है, वे भी येसु के अति दयालु हृदय में संलग्न है, उन्हें कृपा दे कि वे आपकी महती दया को युगों तक महिमान्वित कर सकें। आमेन।

आज सारी विनम्र तथा शिशुओं कीआत्माओं को मेरे पास लाओ।

अति करुणामय येसु, आपने स्वयं कहा है 'मुझसे सीखो मेरा हृदय विनीत और नम्र है'। सभी विनम्र और नन्हें बच्चों की आत्माओं को अपने अति दयालु हृदय के निवास में ग्रहण कीजिए ये ही स्वर्गीय पिता की पसंदीदा आत्माएँ हैं जिनके कारण स्वर्ग में हर्षोल्लास होता है। ये पिता के सिंहासन के सामने मीठी महक वाली गुलदस्ता हैं। पिता स्वयं उस खुशबू का आनन्द लेते हैं। ये येसु के अति करुणामय हृदय के स्थायी निवासी हैं जो लगातार पिता के प्रेम और करुणा के गीत गाती हैं।

शाश्वत पिता अपनी करुणा दृष्टि विनीत, नम्र और नन्हें बच्चों की आत्माओं पर डालिए। जो येसु के अति करुणामय हृदय के निवास में आच्छादित है। वे आत्माएँ आपके बेटे की निकटतम समरूपता हैं। उनकी खुशबू पृथ्वी से उपर जाती हैं और आपके सिंहासन तक पहुँचती हैं। करुणा और सभी अच्छाइयों के पिता इन आत्माओं के प्रति आपके प्यार और आनन्द के द्वारा, हम आप से माँगते हैं।

समस्त संसार को आशीर्वाद कीजिए। सभी आत्माएँ एक साथ मिलकर युगों तक आपके दया की स्तुति एवं महिमागान कर सकें । आमेन।

सातवाँ दिन

आज मेरे पास उन आत्माओं को लाओ जो मेरी करुणा का विशेष आदर-सम्मान और महिमा करती हैं ।

अति दयालु येसु जिसका हृदय ही स्वयं प्रेम है। जो आत्माएँ आपकी महती दया पर विशेष रूप से श्रद्धा रखती हैं और उसका गुणगान करती हैं। उन्हें अपने अति करुणामय हृदय के निवास में ग्रहण कीजिए। ये आत्माएँ स्वयं ईश्वर के सामर्थ्य से तेजस्वी हैं।

आपकी दया पर भरोसा रखते हुए मुश्किलों और वेदनाओं के बीच भी ये आत्माएँ, आगे बढ़ती जाती हैं। ये आत्माएँ येसु के साथ संयुक्त होकर सारी मानवजाति को अपने कंधे पर लेकर चलती हैं। जब ये आत्माएँ इस संसार से विदा लेंगी, तब कठोरतापूर्वक उनका न्याय नहीं होगा। लेकिन आपकी दया उन आत्माओं का आलिंगन करेगी। आमेन।

शाश्वत पिता अपनी दया दृष्टि इन आत्माओं पर डालिए जो आपकी असीम दया पर श्रद्धा रखती हैं तथा विशेष रूप से उसकी प्रशंसा एवं गुणगान करती हैं। ये आत्माएँ येसु के अति करुणामय हृदय से संलग्न हैं। ये जीवन्त सुसमाचार हैं। उनके हाथ दया के कामों से भरपूर हैं और उनकी आत्मा से आनन्द बहता है एवं आपकी दया का गुणगान करता है।

हे महान परमेश्वर आपसे माँगते है कि वे, जो आशा और विश्वास आप पर रखते हैं उसी के अनुसार उन्हें कृपा प्रदान कीजिए कि उनमें येसु की प्रतिज्ञा पूरी हो जाए जैसा कि येसु ने कहा है 'जो उनके असीम दया पर श्रद्धा रखती हैं, उनके जीवन काल में, विशेषकर मरते घड़ी वे स्वयं महिमा के रूप में उनका बचाव करेंगे। आमेन।

आठवाँ दिन

आज मेरे पास शोधकाग्नि की आत्माओं को लाओ ।

अति दयालु येसु, आपने स्वयं कहा है कि दया की इच्छा करो। इसलिए मैं आपके अति करुणामय, हृदय के निवास में शोधकाग्नि की उन आत्माओं को लाता हूँ, जो आपको बहुत प्रिय हैं और जिन्हें अभी तक अपने न्याय के लिए कठोर दंड भुगतना पड़ रहा है। आपके हृदय से बह निकले रक्त और जल की धारा शोधकाग्नि की ज्वाला को बुझा दे। ताकि वहाँ भी आपके दया का त्योहार मनाया जा सके।

शाश्वत पिता अपनी करुणामय निगाहें उन आत्माओं पर डालिए जो शोधकाग्नि में दुःख भोग रही हैं और जो येसु के अति करुणामय हृदय में आच्छादित (संलग्न) हैं।

आपसे निवेदन करता हूँ कि येसु के दुःखभोग और क्रूस मरण के द्वारा और उन के पवित्र हृदय द्वारा, जो पूरी तरह से दुःख (कड़वाहट),से भर गया है, उन पर दया कीजिए और उन आत्माओं पर जो आपके जाँच के अधीन हैं आपकी दया प्रकट कीजिए। उन्हें किसी और नंजर से नहीं, बल्कि सिर्फ आपके प्रिय पुत्र येसु के घावों द्वारा उन पर दया कीजिए क्योंकि हमें आपके असीमित स्नेह और प्रेम पर पूरा विश्वास है। आमेन।

नौवाँ दिन

आज मेरे पास उन आत्माओं को लाओ जो गुनगुनी (उत्साहहीन) हो गई हैं।

अति दयालु येसु आप स्वयं दया हैं। मैं उत्साहहीन आत्माओं को आपके हृदय की दया के निवास में लाता हूँ। ये उत्साहहीन आत्माएँ लाश की तरह है और इनकी उदासीनता से आपका हृदय घृणा से भर गया है। हे दयालू येसु आपकी महती दया, उन पर क्रियाशील हो। आपके पवित्र प्यार की अग्नि में फिर से ये प्रज्वलित हो उठें। उनमें आपके प्यार की ललक (उत्साह) पैदा कर। तथा उन्हें अपने पवित्र प्यार का वरदान दीजिए। आपकी शक्ति के परे कुछ भी नहीं है। हलांकि ये येसु के अति करुणामय हृदय में आच्छादित (संलग्न) है। शाश्वत पिता अपनी करुणामय निगाहें इन उत्साहहीन आत्माओं पर डालिए।

करुणा के पिता, येसु के घोर संताप और क्रूस पर तीन घंटे की असहनीय पीड़ा के द्वारा इन आत्माओं पर दया कर, कि वे भी आपकी दया के गहरे कुंड की महिमा कर सकें। आमेन।

मेरे पास आओ नोवेना

नोवेना करने की विधि

1. येसु के पास आओ और उसकी आराधना करो।
2. ईश्वर का वचन पढ़ें
3. धर्मग्रंथ के विचारों को पढ़े और स्वयं से प्रश्न पूछें।
   - ❖ कौन सा पाराग्राफ मुझे सबसे अधिक छूता है?
   - ❖ पढ़कर मैंने क्या अनुभव किया?
   - ❖ इस पाराग्राफ के द्वारा व्यक्तिगत रूप से येसु ने मुझसे बातचीत की, उसके बारे में क्या बोलूँ।
4. दी गई प्रार्थना के जवाब को पढ़ते हुए अपनी निज प्रार्थनाएँ व्यक्त करते जाएँ।
5. दया की माला विनती द्वारा अपने कुछ निवेदनों को चढ़ाएँ। या उन मतलबों के लिए प्रार्थना करें जिनकी आपको येसु प्रेरणा देते हैं।
6. अनुपूरक प्रार्थनाओं का उपयोग करें. मनन-चिन्तन करें, आप अनुभब करेंगे कि तबरनाकल से सामर्थ्य बह रहा है। शाँति, प्यार और सामर्थ्य आपका होगा।

ख्रीस्त बोलते हैं:

मेरे पास आओ। मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ। जब तुम अपनी माता के गर्भ में गढ़े जा रहे थे - मैं वहाँ था। तुम्हारे जन्म से पहले ही मैने तुम्हें जान लिया। मैने तुम्हें हमेशा से प्यार किया। मेरे पास आओ। बोझ से दबे, लोगो मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।

मेरे साथ रहो और मेरी सुनो। यह मेरा घर है।

मैं तुम्हें अत्यधिक चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे प्यार को अनुभव करो।

मेरा प्यार अग्नि की तरह है, जो सभी अहंकार, घृणा, और पाप को भस्म कर देता हैं। मैं तुम्हारे जीवन को मेरी शाँति और आनन्द से भरना चाहता हूँ। अपने ही घर में कैद होकर मैं यहाँ तुम्हारे सामने हूँ।

मुझे अपने हृदय में साथ लिये चलो। अपने घर में ले चलो, अपने विद्यालय ले चलो, अपने कार्यालय ले चलो, अपनी गलियों में ले चलो, तुम्हारे नृत्य हाल में ले चलो। इस दुःखी संसार में मेरा प्यार बाँटने के लिए मुझे तुम्हारे पैर, हाथ, तुम्हारी आवाज, तुम्हारा हृदय चाहिए। कृप्या मुझे अपने हृदय में ले चलो।

चिंतनः

इसायाह 31:1-4

प्रभु आप क्यों आए?

धर्मग्रंथ मुझे आपके बारे क्या बतलाता है? जब मैं आपके वचन पढ़ता हूँ तब देखता हूँ कि आपने, लोगों को कैसे छुआ और उन्हें चँगा किया। आपने भीड़ को खिलाया आपने उन्हें उनके बंधनों से मुक्त किया, आपने लोगों के जीवन का रूपान्तरण किया। आपके एक वचन ने, आपके हाथ के एक स्पर्श ने, मनुष्य के जीवन को पूर्ण बना दिया। अभी आप कहाँ हो?

वह स्पर्श कहाँ है? जिसने टूटे शरीर को पुनस्थापित किया।

जिसने टूटे रिश्ते को चँगा किया।

जिसने दुर्बल को सबल बनाया।

मैं देखना चाहता हूँ। प्रभु मुझे दिखाओ।

ख्रीस्त बोलते हैं:

मै बहुत ही अद्वितीय और विशेष तरीके से यूखरिस्त में उपस्थित हूँ। ये वही हाथ हैं जिसने मुर्दे को छुआ और उसे जीवन दिया, उसी हाथ ने पानी को छुआ और पानी दाखरस में बदल गया। ये वही हाथ है - जिसने अंधे को छुआ और आँखों को ज्योति दी। मानव की हर एक बीमारी को चँगाई देने और उनके जीवन के उग्र तुफान को शाँत करने के लिए मैं उसी सामर्थ्य के साथ यहाँ हाजिर हूँ।

मैं आज तुम्हें फिर से कहता हूँ कि मुझे अपने साथ घर ले चलो, कार्यालय ले चलो, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें अशीषित करूँगा कि तुम दूसरों के लिए आशीष का कारण बनोगे।

क्या तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे?

प्रार्थना:

येसु आइए और मेरे साथ चलिए। मैं अपना हृदय आपको एक वेदी की तरह चढ़ाता हूँ। मैं प्यार से आपका स्वागत करता हूँ, कि आप मुझमे निवास करें और मेरा उपयोग करें। प्रभु मैं अरसे से अपनी तकलीफों,आहतों और बीमारियों को ढोता रहा, आपके पास नहीं आया, जबकि आप पवित्र साक्रामेंत में मेरा इन्तजार करते रहे।

मैं आपके प्यार और सामर्थ्य को यूखरिस्त में अभी महसूस करता हूँ। मैं आपको दूसरों तक पहुँचाऊँगा। आइए और मुझमें निवास कीजिए प्रभु, और दूसरों के जीवन को छूने में मेरा उपयोग कीजिए। आमेन।

(आप जितनी देर मौन रह सकते हैं रहिए)

पूरी दुनिया के लिए दया की माला विनती बोलिए।

दूसरा दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

स्वागत है मेरे बच्चे। मैं जानता था कि तुम आओगे। तुम्हें देने के लिए मेरे पास बहुत कुछ हैं। तुम्हें और जिन्हें तुम प्यार करते हो, उन्हें देने के लिए मेरे भंडार में बहुत से वरदान है। तुम्हारे सभी सपनों को पूरा करने के लिए मेरे पास सामर्थ्य और प्यार है। सपने जो दुःखी दुनिया को प्यार, शाँति और चँगाई देती है। जब इन हाथों ने कोढ़ी को छुआ और वह चँगा हो गया। तब क्यों मेरे बच्चे - लाखों बिना चँगाई प्राप्त किए जाते हैं और अनावश्यक दर्द में मर जाते हैं?

यहाँ बैठो मौन या अप्रयुक्त। मैं कितना तरसता हूँ कि मेरे लोग मेरे पास आएँ और बस मेरे सामने बैठे रहें। यह दुनिया क्रोध से भरी है, इतना अन्याय है, इतनी पीड़ा है लेकिन एक शक्ति है, एक व्यक्ति है जो तुम्हें चँगाई दे सकता है, मुक्ति दे सकता है और शैतान ने दुनिया से जो कुछ चुरा लिया है, उसे फिर से वापस कर सकता है। वह शक्ति इसी जगह है।

चिंतन:

यूखरिस्त में ईश्वर का सामर्थ्य हमेशा है, यदि आप यूखरिस्त के सामने बैठते हैं, मैं इस सामर्थ्य का दोहन कर रहा हूँ।

यह सामर्थ्य, ईश्वर का सामर्थ्य, हमारे जीवन की हर एक घटनाओं में देखने को मिलती है। ईश्वर ने योशुआ से कहा - मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें कभी नहीं त्यागूँगा। (योशुआ 1:5)

भजन बनाने वाले ने गाया: प्रभु तुम्हें हर बुराई से बचायेगा और तुम्हारी आत्मा की रक्षा करेगा। तुम जहाँ कहीं भी जाओगे, प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा। (स्तोत्र 121:7-8)

संत पौलुस ने लिखा: शाँति का प्रभु स्वयं आप लोगों को हर समय और हर प्रकार शाँति प्रदान करता रहे। (थेसलनीकियों के नाम द्वारा पत्र 3:16)

ईश्वर जो शाँति का श्रोत है उसकी शाँति हम पर हमेशा बनी रहे।

संत पौलुस कुरिन्थियों को प्रोत्साहित करते हैं (कुरिन्थियों के नाम द्वारा पत्र 9:8-9)

ईश्वर आप लोगों को प्रचुर मात्रा में हर प्रकार का वरदान देने में समर्थ है। (धर्मग्रंथ के इन पदों को बार-बार दुहराएँ: वे तुम्हारे हृदय में अंकित हो जाएँगी।

हर एक प्रतिज्ञा को अपनी विशेष आवश्यकता के लिए दावा कीजिए।

प्रार्थना:

येसु प्रभु - आपके आने से इतिहास काल बदल गया। मैं जानता हूँ कि आप प्रकाश हैं और यह प्रकाश कभी धूमिल नहीं होगा। कोई भी अंधकार या शोकपूर्ण घटना इसे बुझा नही पायेगी। येसु आपके प्यार का प्रभुत्व बना रहेगा जो घृणा, कड़वाहट और कलह पर विजय पाता है।

प्रभु ऊँची दीवारें आपको रोक नहीं सकती, युद्ध के हथियार आपके शाँति प्रचार को नहीं रोक सकती।

बस यहीं पर वह सामर्थ्य है जो हमारे जीवन में शांति और चँगाई दे सकती है। जो हमें हर प्रकार की नकारात्मक से छुटकारा दिला सकती है। फिर भी मैं यह अनुभव करता हूँ कि मैं अपने अंधेपन के कारण दूसरों के लिए शांति के वरदान का खंडन करता हूँ, मैं

आपसे उसी शांति की खोज करता हूँ। जब मैं अपने भाई से अपनी आँखे और हृदय फेर लेता हूँ तब मैं कैसे (इसायाह 41:10) के वचन 'मैं अपने दाहिने विजयी हाथों से तुम्हें संभालूँगा' को देखने की अपेक्षा रख सकता हूँ।

प्रभु मेरे कान बहरे हैं जो मैं आपके पश्चात्ताप के आह्वान को नहीं सुन सकता हूँ। मैं अपने स्वार्थ कृत्यों के कारण अंधा हो गया हूँ। प्रभु मैं बार-बार नाकाम रहा हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। येसु मुझे सिखाइए कि, मैं वह व्यक्ति बन सकूँ, जो आप मुझे बनाना चाहते हैं। आमेन।

ख्रीस्त बोलते हैं:

मैं यहाँ हूँ मेरे बच्चे, मेरी बाँहे तुम्हारी ओर फैली हैं, तुम्हें तुम्हारी दुर्बलताओं पर काबू पाने में तुम्हारी मदद करने के लिए। मेरी शक्ति तुम्हारे लिए पर्याप्त है। यूखरिस्त में मुझे देखो। मैं यहाँ तुम्हारे बीच निवास करता हूँ कि तुम्हारे अतीत को चँगा करूँ और भविष्य का निस्तार करूँ। मैं तुम्हारा नाम लेकर तुम्हें बुलाता हूँ। क्या तुम मुझे प्यार करते हो? हाँ? तब मेरी शाँति और मेरा प्यार तुम्हें मिलेगा। मेरा प्यार और मेरी शाँति अपने साथ ले लो।

(तुम उसकी उपस्थिति में मौन रहो, दुनिया में शांति के लिए दया की माला विनती बोलो)

ख्रीस्त बोलते हैं:

मेरे पास आओ - तुम्हारा हाथ मेरे हाथ पर रखो। डरो मत। तुम मेरे लिये बहुमूल्य हो, मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ - मैं तुम्हारा चेहरा देखना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे आँसू पोछूँगा। तुम अद्वितीय हो। जब से मैंने इस दुनिया को बनाया तुम्हारे जैसा न कोई था और न कोई होगा। तुम्हारा सिर उपर उठाओ, जीवन दान के लिए मेरी स्तुति करो। तुम विशिष्ट बनाये गये हो कि मेरी स्तुति करो।

तुम क्यों चिंता करते हो? क्यों तुम इतना अकेलापन महसूस करते हो? तुम्हारे मन की शाँति खोने का क्या कारण है? मुझे बताओ। यदि तुम अपना हृदय खाली कर देते हो, तुम मेरी शाँति का अनुभव करोगे। क्या अतीत की यादें तुम्हें दुख पहुँचाती हैं? क्या कोई ऐसा गुप्त दोष है जो तुम्हारे हृदय को काट खाता और परेशान करता है? आओ और इसे मुझे दे दो। मैं प्यार से तुम्हारे अतीत के दोषों को क्षमा कर दूँगा।

चिंतनः

संत लूकस 4:40-41

उनके बारे में सोचो, जिन्हें तुम जानते हो, जो निराशा, आत्मदया, अवसाद के जाल में फंसे हुए हैं। उन्हें येसु के पास लाओ - इस प्रकार तुम उपचार के साधन बनोगे। क्या तुम किसी को जानते हो जो अपने हृदय में क्रोध रखता हैं या बदले की भावना रखता है, या किसी को दवा, दवा नशेडी की लत, शराबी, या सम लैंगिकता का शिकार है, उन्हें येसु के पास लाओ। येसु इन सबसे छुटकारा देने के लिए आया। येसु जीवित है और वो इस वेदी पर है। हम उनके वचनों को लेकर कहें कि हमें मुक्ति मिले। हमारे परिवार के सदस्यों को और पूरी दुनिया को मुक्ति दिलाये।

अपने दुःखभोग द्वारा उसने हमारे आहतों को चँगा किया। वह दुखियों को सांत्वना देता है और उनके घावों पर पट्टी बाँधता है। (स्तोत्र 147:3)

वह मुझे हरे मैंदानों में चराता और शाँत जल के पास ले जाकर मुझमें नया जीवन संचार करता है। (स्तोत्र 23:2-3)

मैं अपनी भटकी हुई भेड़ें खोजने जाऊँगा, कुहरे और अंधेरे में जहाँ कहीं वे तितर-बितर हो गई हैं, मैं उन्हें वहाँ से लाऊँगा। जो भेंड़े खो गई हैं मैं उन्हें खोज निकालूँगा, जो भटक गई हैं, उन्हें लौटा लाऊँगा, जो घायल हो गई हैं उनके घावों पर पट्टी बाँधूँगा। (एजेकिएल 34:12,16)

(धर्मग्रंथ का जो पद आपको सबसे अधिक सांत्वना देता है उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करो और येसु आपको चैन देंगे।

प्रार्थनाः

येसु, आइए, हमारे साथ चलिए हर रोज प्रातः सूरज उगता है, और तेज आशा चमकती है। हम आशा को दूसरों तक ले जाएँगे।

प्रभु आप मुझे उनके पास ले चलिए, जिनसे मेरे द्वारा आप बोलना चाहते हैं - मैं जानता हूँ कि जब मैं अपने को आपके प्रयोग में लाने की अनुमति देता हूँ - आपकी उपस्थिति मेरे जीवन में अधिक से अधिक होगी। मैं दूसरों को जितना ज्यादा सांत्वना देता हूँ उतना ही ज्यादा मैं आपकी चँगाई और सांत्वना का अनुभव करूँगा।

प्रभु मैं फिर भी डरता हूँ, कि कहीं मैं डगमगा न जाऊँ, कहीं मेरे कदम कमजोर न पड़ जाएँ, कहीं मैं निरुत्साह न हो जाऊँ। येसु मेरे पास रहिए। प्रभु यदि मेरी पकड़ कमजोर हो जाए तब भी आप मेरा हाथ थाम लीजिए। दिन, महीने, साल गुजरते जाए पर प्रभु ऐसा होने पाए कि मैं आप को न भूल जाऊँ।

ऐसा होने दे प्रभु कि हर दिन आपके चरणों में मुझे सांत्वना, सुख शांति मिले एवं मुझमें नये जीवन का संचार हो।

प्रभु उन सबकों आशीर्वाद दीजिए जो आपसे मिलने को डरते हैं। येसु दूसरे भी आपको जाने, जैसा कि आपने मुझे अपने को प्रकट किया। हाँ येसु वे भी आपको जान पाएँ कि आप उनके मुक्तिदाता हैं, उनके शौख्यादाता है, उनकी अनन्त शाँति हैं। आमेन।

(जो किसी अपराध में पकड़े गये और शर्मिन्दगी में हैं । उनके लिए दया की माला विनती बोले)।

चौथा दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

सहस्र स्वागत है तुम्हारा। मेरा हृदय कितना तरसता है तुम्हें देखने के लिए। उन सभी झूठी विनम्रताओं को भूल जाओ जिसके कारण तुम्हें लगता है कि तुम मेरे पास आने के योग्य नहीं हो। मैं तुम्हारे अपराधों को जानता हूँ, मै तुम्हारी असफलता से अवगत हूँ। कुछ भी गुप्त नहीं है।

तुम्हारी सारी दुर्बलताओं को जानते हुए भी मैं तुम्हें चाहता हूँ।

जब तुम पश्चात्ताप करते हो तब मैं मेरा प्यार, मेरी क्षमाशीलता, और मेरी स्वीकृति तुम्हें देता हूँ, मेरी ही आत्मा ने तुम्हारे कदमों को यहाँ आने के लिए निर्देशित किया है। मैं ने तुम्हें संसार के लिए अग्रदूत नियुक्त किया है। याद करो, मेरी मगदलेना को, मैने दूसरों को यह संदेश देने के लिए चुना 'कि मैं जी उठा हूँ' अब मैं तुम्हें, संसार को वह संदेश सुनाने के लिए चुनता हूँ "कि मैं जीवित हूँ और यहाँ पवित्र साक्रमेंत में उनके आने की बाट जोह रहा हूँ।"

जीवन का रूपान्तरण के लिए, दुखियों को दिलासा देने के लिए, पापों को क्षमा करने के लिए, भूखों को भोजन देने के लिए, व्याकुल हृदयों को शाँत करने के लिए, मेरे हृदय में प्यार और सामर्थी हाथ लेकर यहाँ हाजिर हूँ।

मेरे पुत्र/पुत्री मुझे कितना दुःख होता है, जब मैं देखता हूँ कि मेरे बच्चे दुःख और तकलीफ झेल रहे हैं और शरीर, मन और आत्मा के इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मेरे पास आने से इन्कार करते हैं।

तुम जाकर दूसरों को यह सुसमाचार सुनाओ, उन्हें मेरे प्यार का अनुभव बाँटो।

कृपा करके मेरे प्यार का संदेशवाहक बनो। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।

चिंतन :

जो यूखरिस्त के सामने बैठते हैं वे येसु के संवेदनशील और स्थायी प्यार का अनुभव करते हैं, जिसे वे कभी भूल नहीं सकते हैं, क्योंकि येसु उनके हृदय की गहराई में पहुँचते हैं।

येसु हमारे हृदय को, हमारी समझ के परे स्पर्श करते हैं और हमारे जीवन को रहस्यमय तरीके से बदल देते हैं।

यह मायने नहीं रखता, कि हम किस धर्म को मानते हैं या हमारा अतीत कैसा था। येसु का सबके लिए प्यार, हरएक को अंगीकार करता है।

ख्रीस्त, भाषा, धर्म की सभी बाधाओं को पराजित कर सब को प्यार के सूत्र में बाँधते हैं।

वेदी में जो मौन सामर्थ्य निवास करता है दुनिया को आशीषित करने के लिए पहुँचता है।

धर्मग्रंथ का विचार:

क्योंकि जहाँ तुम्हारी पूँजी है वहीं तुम्हारा हृदय भी होगा। (मत्ती 6:21)

मनुष्य तो बाहरी रंग-रूप देखता है किंतु प्रभु हृदय देखता है (1 समूएल 16:7)

मैं, उन्हें एक नया हृदय प्रदान करूँगा और उनमें एक नई आत्मा रख दूँगा। मैं उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकाल कर, उन्हें रक्त-मांस का हृदय प्रदान करूँगा। जिनसे वे मेरी संहिता पर चलें और ईमानदारी से मेरी आज्ञाओं का पालन करें।

इससे वे मेरी प्रजा होंगे और मैं उनका ईश्वर होऊँगा।
(एजेकिएल 11:19-20)

मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा और तुमको कभी नहीं त्यागूँगा।
(इब्रानियों 13:5)

प्रार्थनाः

अति प्यारे येसु, मैं आज के इस दिन के लिए, क्षमा के प्यार भरे आश्वासन और आपकी स्वीकृति के लिए, आपको धन्यवाद देता हूँ।

आपका कोमल प्यार कितना अच्छा है। मेरी असफलताओं और दुर्बलताओं के बाबजूद भी आप मुझे प्यार करते हैं।

प्रभु मैं आपकी पुकार सुनता हूँ, आप कहते हैं, घर जाओ जिनके संपर्क में तुम आते हो उन्हें मेरा प्यार बाँटो।

हाँ प्रभु, मैं जानता हूँ, कितने ऐसे है, जो अकेलेपन और अंधकार में जीवन जी रहे हैं, और वे इतना दर्द सह रहे हैं क्योंकि उन्होंने कभी नहीं सुना कि आप चंगाई दाता हैं। प्रभु मैं आपका सामर्थ्य दूसरों तक पहुँचाने में विफल रहा। आज मुझे मालूम है, कि मैं जितना ज्यादा आपका सामर्थ्य दूसरों पर प्रकट करूँगा उतना ही ज्यादा आपके सामर्थ्य से भर जाऊँगा। क्योंकि आप कहते है - दो और तुम दुगुना पाओगे। अतीत कुछ भी रहा हो - प्रभु, आज से नई शुरुवात करता हूँ।

मैं इसी वेदी की ओर मेरा हाथ उठाता हूँ और अपने को तुझे अर्पण करता हूँ कि मैं आपसे आशिष पाऊँ और आपकी आशिष को दूसरों तक पहुँचाने का साधन बनूँ।

प्रभु उन्हें देखिए जो प्यार और सत्य की खोज में हैं। उन्हें आपके प्रकाश में ले आइये। प्रभु उन्हें देखिए जो झूठे भगवान की पूजा करते हैं। आप उनके लिए मर गये और उन्हें प्यार करते हैं। हमारी प्रार्थना के द्वारा उन्हें आशीष दीजिए और आपके निकट लाइए। उन्हें ढूँढ़िए जो शरीर, मन और आत्मा से पीड़ित हैं। उनके दुःख में उन्हें सांत्वना दीजिए और मुसीबतों में उन्हें संभालिए प्रभु उन पर दया कीजिए जो दूसरों पर अत्याचार करते हैं और उन्हें पर दुःख

पहुँचाते हैं। उन्हें नया हृदय प्रदान कीजिए। उनका मन परिवर्तन कीजिए, कि वे जीवन की गलतियों को सुधार कर आपमें विश्वास कर सकें।

प्रभु मुझे आशीष दीजिए। मेरे सभी कामों और वचनों पर आपकी ज्योति चमके। आमेन।

(दया की माला विनती संसार भर के सभी पापियों के लिए बोलें, ताकि उन्हें पश्चात्ताप की कृपा मिले)

पांचवाँ दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

मेरे पास आओ, डरों मत। आज बहुत ही विशेष बात तुमसे करनी है - क्या तुम्हें मालूम है कि मुझसे हर एक मुलाकात का पुरस्कार तुम्हें मिलेगा ? जो भी मेरे पास आता है कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। तुम सुसमाचार सुनोगे। तुम्हारा हृदय आनन्द और प्यार से भर जाएगा। तुम देखोगे, तुम्हारा मन प्रबुद्ध हो जाएगा। जब तुम मेरे सामने मौन बैठते हो, तुम्हारी कल्पना के परे तुम समृद्ध होते जाते हो। मैं तुम्हें इसे समझाना चाहता हूँ तुम मेरे लिए बहुत ही विशेष हो, मैं तुम्हें नाम से जानता हूँ। तुम्हारा नाम मेरी हथेली पर खुदा हुआ है।

कोई बात नही तुम स्वयं को जिस किसी रूप में देखो। लेकिन तुम मेरे परमप्रिय हो, जिसके लिए मैंने अपना लहू बहाया और मर गया।

मैं तुम्हें विशेष आशीष देता हूँ। मैने तुम्हें बहुत सारे वरदान दिये हैं। यदि तुम इनका उपयोग करोगे तो वे बढ़ेंगे। तुम याद करो, जिसने मुझे पाँच रोटियाँ और दो मछली दी और मैने कितनों को खिलाया?

तुम जो कुछ प्रयोग करोगे और मुझे चढ़ाओंगे मैं स्वीकार करूँगा।

तुम्हारे हाथ मुझे देदो, उन्हे मेरी और बढ़ाओ, मैं उन्हें आशीषित करूँगा और वे बाँटने के लिए हमेशा खुले रहेंगे। तुम्हारी आँखें मुझे दो, मैं उन्हें आशीषित करूँगा, कि तुम दूसरों की जरूरत देख सको और उनकी मदद करो। मुझे तुम्हारी आवाज दो, मैं उसे आशीष दूँगा एवं उपयोग करूँगा ताकि जो भी सुने वे प्यार और आनन्द से भर जाएँ।

तुम्हारा हृदय मुझे दे दो, जैसे मैने मेरा हृदय तुम्हें दिया, ताकि मैं तुम्हारे द्वारा प्यार दे सकूँ।

चिंतन :

दो और तुम्हें दोगुणा दिया जाएगा। हम ईश्वर की उदारता में उनसे बेहतर नहीं हैं।

जैसे ही मैं चुपचाप बैठकर शरीर के हरएक अंगों को चढ़ाता हूँ कि वे उनकी पवित्र इच्छानुसार उनका प्रयोग करें। यूखारिस्तीय हृदय आनंदित होता है, फलस्वरूप हमारे लिए हमारी समझ के परे आशीषों की प्रतिज्ञा करता है।

1. मैं अपने विजयी दाहिने हाथ से तुम्हें संभालूँगा (इसायाह 41:10)।
2. ईश्वर आप लोगों को ईसा मसीह द्वारा महिमान्वित कर, उदारतापूर्वक आपकी सब आवश्यकताओं को पूरा करेगा (फिलिप्पियों 4:19)
3. जो मुझे बल प्रदान करते हैं, मैं उनकी सहायता से सब कुछ कर सकता हूँ। (फिलिप्पियों 4:13)
4. मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा। मैं तुमको कभी नहीं त्यागूँगा (इब्रानियों 13:5)
5. कोई या कुछ भी हमें ईश्वर के प्रेम से वंचित नहीं कर सकता है (रोमियों 8:38)
6. मैं प्रभु तुम्हारा ईश्वर, तुम जहाँ कहीं जाओगे, सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।

प्रार्थना:

प्रभु मैं कितना अंधा था, कितनी बार मैं आपसे दूर हो गया और दुःख झेला। क्योंकि मैं आपके पास नहीं आया।

जीवन में कई बार उदासी में दिन बीते, रातों कों नींद नहीं आई। मेरे अपने भय की आवाज इतनी ज्यादा थी, कि मैं आपकी पुकार सुन नहीं पाया।

प्रभु यह सच है, मैं बहुत बार आपके पास नहीं आया, क्योंकि मुझे डर था, कि आप मुझे क्या कहेंगे।

बहुत बार मेरे मन में आया कि आपने मुझे छोड़ दिया है क्योंकि मैं भला इन्सान नहीं था, और आप मुझे सुनने की परवाह भी नहीं करेंगे।

येसु मुझे क्षमा कीजिए, आज मुझे पता चला, कि मैं कितना मूर्ख हूँ। आपके जैसा अति कोमल और प्रिय मित्र मुझे कोई कभी नहीं मिला। आपकी एकमात्र इच्छा है सिर्फ और सिर्फ देना, बदले में बिल्कुल छोटी चीज़ माँगते हैं, वह छोटी वस्तु भी देने को मैं अनिच्छुक हूँ, प्रभु मैं मेरा हृदय आपको चढ़ाता हूँ। प्रभु आइए, ईर्ष्या, क्रोध, उदासीनता, स्वार्थ आदि की दीवारों को तोड़ गिराइए और अपने वचनों से मेरे हृदय को चँगा कीजिए।

(मेरे अन्दर जो दर्द है, उससे आराम दीजिए। मेरे अन्दर की पीड़ा से मुझे संतुष्ट कीजिए)

प्रभु दुनिया के सभी भाइयों और बहनों की ओर से मैं आपको हमारे घर में आमंत्रित करता हूँ। हमारा घर आपको दुहाई देता है। माता पिता अलग हो चुके हैं। दम्पति जिन्होंने आपकी वेदी के सामने प्यार में बने रहने का दावा किया था, आज एक दूसरे पर चिढ़ रहे हैं। वचन जो एक समय प्यार को प्रज्वलित करता था, आज मजाक बन गया है। येसु सभी परिवार पर दया कीजिए। आपकी शाँति और प्यार परिवार में पुनःस्थापित कीजिए। प्रभु फिर से आइए। हमसे फिर से बातचीत कीजिए, हमारा स्पर्श कीजिए और हमें चँगा कीजिए। आमेन।

(दया की माला विनती सभी टूटे परिवार के लिए बोलिए)

छठा दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

मेरे परमप्रिय मित्र तुम्हारा स्वागत है।

मैं अति प्रसन्न हूँ कि तुमने मेरे साथ समय बिताने का निर्णय लिया। मेरे हृदय को कितना आनन्द और चैन मिलता है, यह जानकर कि तुमने सबकुछ छोड़कर यह पल मेरे साथ गुजारने का निर्णय लिया है। मैं निश्चय ही तुम्हें, तुम्हारी अपेक्षा से बढ़कर पुरस्कृत करूँगा।

मेरा हृदय मेरे बच्चों की पीड़ा को जानता है। मेरे बच्चों की व्यथा को हल्का करने के लिए मैं यहाँ हूँ, डरो मत, तुम्हारे दुःख और वेदना उपर उठाओ और मुझे दे दो।

मुझे तुम्हें प्यार करने दो, मेरा वह प्यार अनन्त और पवित्र है। केवल मेरा प्यार ही तुम्हारी सब जरूरतों को संतुष्ट कर सकता है। में तुम्हें नहीं भुलाऊँगा। बहुत बार तुम्हें लगता है कि कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है, मैं तुम्हारी प्रार्थना नहीं सुन रहा हूँ। तुम मुझ में विश्वास करो और भरोसा रखो।

मुझ पर विश्वास करो, तुम्हें बिना शर्त के संपूर्ण प्यार करता हूँ। मुझमें विश्वास करो, मेरे प्यार में विश्वास करो। मेरी सामर्थ्य में विश्वास करो। मेरे प्रेम के बारे में बहुत नहीं बतला सकता। मेरा प्यार तुम्हारे लिए गहरा है।

मैं तुम से गहरा प्यार करता हूँ और मैं, तुम्हें कभी अनाथ नहीं छोड़ूंगा।

मेरा स्पर्श और मेरा प्यार चँगाई देता है। मेरे बहुमूल्य रक्त से तुम्हें ढक लेने दो। मेरा लहू जो बह निकला, मेरा प्यार है, तुम्हें धो डालता और शुद्ध करता है । मेरे बच्चो मैं तुम्हें बहुत सी कृपाएँ देना चाहता हूँ, लेकिन बहुत से लोग उसे पाना नहीं चाहते और मेरे पास आकर चँगाई पाने से इन्कार करते हैं। क्या तुम उनके पास जाओंगे और उन्हें बतलाओंगे? क्या उनके पास मैं तुम्हें भेज सकता हूँ ?

चिंतन :

1. यिरमियाह 15:18-19. मेरी पीड़ा का अंत क्यों नहीं होता? मेरा घाव क्यों नहीं भरता? वे ठीक क्यों नहीं होते? क्या आप चाहते हैं कि मैं उस झरने के सदृश निराश हो जाऊँ जो ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती है। इस पर प्रभु कहते हैं, यदि तुम अपने शब्द वापस लोगे, तो मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा और तुम फिर से मेरी सेवा करोगे।

2. स्तोत्र ग्रंथ 145:8 - प्रभु दया और अनुकम्पा से परिपूर्ण है। वह सहनशील और अत्यंत प्रेममय है।

3. एजेकिएल 36:33 - प्रभु ईश्वर यह कहता है मैं जिस दिन तुम लोगों को तुम्हारे सभी पापों से शुद्ध कर दूँगा। उस दिन से मैं नगरों को फिर से बसाऊँगा। और उजड़े स्थानों का पुनर्निर्माण होगा।

4. एजेकिएल 37:23 - मैं उन सब पापों से उन्हें छुड़ाऊँगा और शुद्ध करूँगा। वे मेरी प्रजा होंगे। और मैं उनका ईश्वर होऊँगा।

5. संत मत्ती 23:37 - मैने कितनी बार चाहा कि मेरी बाँहें तुम्हें वैसे ही एकत्र करें, जैसे मुर्गी अपने चूजों को अपने डैनों के नीचे एकत्र कर लेती है। परन्तु तुम लोगों ने इनकार कर दिया। होशेआ 14:4 मैं मेरी प्रजा को एकत्र करूँगा मैं सारे हृदय से उन्हें प्यार करता हूँ।

प्रार्थनाः

धन्यवाद प्रभु, आपने मुझे अपने यहाँ बुलाया। बहुत बार मैं यहाँ-वहाँ भटकता रहा, इसके-उसके पास जाता रहा। एक लक्ष्य छोड़कर दूसरे लक्ष्य के पीछे भागता रहा। कभी-कभी सब कुछ होते हुए भी क्षणिक संतुष्टि ही पाया था, आनन्द भी क्षणभंगुर ही मिला। कभी पूर्णता प्राप्त नहीं हुई, बल्कि खालीपन ही महसूस किया।

कभी-कभी मुझे यह भी मालूम नहीं हुआ, कि मैं क्या चाहता हूँ और मैं क्या खोज रहा हूँ।

येसु अब मैं जान गया हूँ, कि आपने मुझे आपके खातिर बनाया और सिर्फ आप में ही मेरी सारी जरूरते पूरी होती हैं। आप में ही मुझे आराम मिलता है।

अब मुझे लगता है, मैं येसु के पास अपने घर आया हूँ और येसु के साथ ही रहना चाहता हूँ। प्रभु मैं अभी अनुभव करता हूँ कि मेरी सभी समस्याओं का समाधान आप में हैं। आप जिस विधि, जिस समय और जिस तरीके से मेरी प्रार्थनाएँ सुनेंगे उसे मैं स्वीकार करता हूँ। क्योंकि मैं सहमत हो गया हूँ कि आप मुझे जानते हैं, आप जानते हैं कि मेरे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है। आप मुझे इतना प्यार करते हैं और जब मैं आपसे मछली मांगूँ तो आप बिच्छू कभी नही देंगे।

येसु मैं आप पर भरोसा करता हूँ

मैं आप पर विश्वास करता हूँ।

मैं विश्वास करता हूँ, कि आप मुझे प्यार करते हैं।

मैं आपके प्यार को अपना सब कुछ समर्पित करता हूँ।

(दया की माला विनती अपने सारे मतलबों और उनके लिए जो जेल में हैं)

सांतवाँ दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

तुम सब जो प्रसन्न हो, कि मैं तुम्हारी खुशियों को पूर्ण बना दूँगा, तो मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बतलाना चाहता हूँ कि तुम्हारी वास्तविक खुशी कौन ले जाता है। घृणा, नफरत, विद्वेष, वैमनस्य, शिकायत, अनसुलझे संघर्ष, लालच, स्वार्थ और कारक आदि तुम्हारी खुशियों को छीन लेते हैं। सीखो कैसे तुम्हारे हृदय को पवित्र रखना है। मेरी अच्छाई और सुन्दरता को अपना लो।

जो विपत्ति में है मेरे पास आओ। क्या तुम्हें लगता है कि जिन्दगी में तुम्हारे साथ अन्याय हो रहा है? क्या तुम्हारी योजनाएँ असफल रही हैं। जिनपर तुमने आशा रखी, उन्हीं से निराशा मिली? क्या जीवन में सब कुछ गलत हो रहा है?

मेरे बच्चे तुम अभी सही जगह पर हो। मुझसे बोलो, जिस तरह कचरे डब्बे से कचरे को उडेल कर कचरे डब्बे को खाली किया जाता है, उसी तरह अपने हृदय की सारी पीड़ाओं को मुझ पर डाल दो और अपना हृदय खाली करो। मेरी आत्मा तुम्हें शांति, आराम और सही दिशा प्रदान कर रही है।

तुम जितनी देर चाहो मेरे सामने बैठो और तुम्हें आराम तथा बल मिलेगा, बाहर जाओ और मेरा सेवक बनो, उन्हें ढूढ़ो जो असफल हैं, दुःख भोग रहे हैं, आशा खो चुके हैं। मैं घायल शौख्यदाता हूँ। तुम भी, जो दुःख झेल रहे हो आहत शौख्यदाता हो, जो दया और प्यार मैने तुम्हें दी है उसे दूसरों में बाँटो। मैं तुम्हें अपना प्रेरित नियुक्त करता हूँ। तुम्हारी पीड़ा ने तुम्हें सिखाया कि तुम दूसरों को सुनने, चंगाई पाने और आशा का साधन हो, मेरे बच्चों, क्या मैं बहुत समय तक अपने को छुपाया। तुम्हारे द्वारा मेरा सामर्थ्य प्रसार हो सकता है, सत्य और प्यार के मेरे राज्य का विस्तार हो सकता है। तुम किस प्रकार से मेरे प्रेरित बन सकते हो?

चिंतनः

(1) योहन 15:16

तुमने मुझे नहीं चुना, मैने तुम्हें इसलिए चुना और नियुक्त किया कि तुम जाकर फल उत्पन्न करो, तुम्हारा फल बना रहे।

(2) इसायाह 6:8

मैं किसे भेजूँ, हमारा संदेशवाहक कौन होगा? और मैंने उत्तर दिया, 'मैं प्रस्तुत हूँ, मुझको भेज'।

(3) यिरमियाह 1:5 और 8

माता के गर्भ में रचने से पहले ही मैंने तुमको जान लिया। मैने तुम्हें राष्ट्रों का नबी नियुक्त किया। डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।

(4) विधि विवरण 32:10-12

उसने उन्हें मरुभूमि में भयानक निर्जन स्थान में पाया। उसने उन्हें संभाला और शिक्षा प्रदान की। आँखों की पुतली की तरह उनकी रक्षा की। गरुड़ जिस तरह अपने नीड़ की रखवाली करता और अपने बच्चों के उपर मंडराता है उसी तरह उसने अपने पंखों को फैला कर, उन्हें उठाया और अपने पंखों पर ले गया।

(5) मारकुस 16:15

इसके बाद ईसा ने उन से कहा संसार के कोने-कोने में जाकर सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ।

(ध्यान दें: मैं मुख से प्रचार कर सकता हूँ, प्रवचन सुनाकर मेरा जीवन ही खुला सुसमाचार है, जिसे देखकर लोग येसु को जान सकते हैं।)

प्रार्थनाः

येसु आपके पास आने से मुझे चैन, आराम तथा आशीर्वाद मिलता है यह एक बात है। परन्तु महान् कार्य भार को पूरा करना एक "दूसरा मूसा" बनना है। मैं भी इसायाह के समान बहाने बनाता हूँ, मैं यिरमियाह के समान अपनी अयोग्यता के प्रति सजग हूँ। स्वयं को निरस्त्र पाता हूँ। इस के बावजूद आपकी पैनी निगाहें, मेरे हृदय के गहराई की थाह लेती है। मेरे स्वार्थपन और अहंकार के बावजूद आपका आव्हान मैं सुन सकता हूँ। मुझे मालूम है, मेरे बहाने वास्तविक नहीं हैं, मैं अपने मन में कलवारी की यात्रा करते हुए, आपको मानव जाति के लिए घोर पीड़ा सहते हुए देखता हूँ। मानवता के लिए आपके हृदय की धड़कन मैं समझ सकता हूँ।

प्रभु यह कठिन है लेकिन मैं जाऊँगा। क्योंकि आपने प्रतिज्ञा की है, कि आप मुझे मेरे संसाधनों पर नहीं छोड़ेंगे।

येसु आइए, मेरे कठोर हृदय को अपने प्यार की चिनगारी से स्पर्श कीजए। हमारी आँखें खोल दीजिए, आप की शाँति और प्यार तथा आप की मुक्ति के शुभ सन्देश की घोषणा करने के लिए मेरी जिह्वा खोल दीजिए। यूखरिस्त का सामर्थ्य असीम है। हम उसी सामर्थ्य को लेकर जाएँगे, आज हमें आशीर्वाद दीजिए तथा आप के अति तेज और शुद्ध प्यार से हमारे हृदय को भर दीजिए।

प्रभु इस वेदी से आपका सामर्थ्य, प्यार और चँगाई देने के लिए हमारे साथ आइए।

(दया की माला की रोजरी - सभी बीमार और पीड़ित लोगों के लिए बोलें)

आठवाँ दिन

ख्रीस्त बोलते हैं:

नन्हे मुन्ने मेरे निकट आओ मेरे पास बैठो। मेरेअत्याधिक और शर्त रहित प्यार में गहरी स्वास लो।
तुम्हारे लिए मैं मनुष्य बना।
तुम्हारे लिए मैं जीवित रहा हूँ।
तुम्हारे लिए मैं मरा।
तुम्हारे लिए मैं फिर से जीवित हुआ।
तुम्हारे लिए मैं इस वेदी में निवास करता हूँ।

मैं हर एक दर्द भरी गुप्त यादों को जानता हूँ। तुम्हारे हृदय की गहराई में छिपे दर्द को जानता हूँ। मेरे सामने उपस्थित हर एक हृदय की चिंता, शंका, निराशा को जानता हूँ। मैं भूखे की भूख, अकेलेपन के आँसू, तिरस्कृत की कड़वाहट और कैदियों की वेदना को जानता हूँ। यदि मेरा सामर्थ्य और प्यार के बारे में मालूम हुआ होता, तो वह पता होता कि मैंने मानव की हर एक पीड़ा और जरूरत को अपने उपर ले लिया है ।

कृपा करके आओ और सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी माँगो। भूखे, पंगु, गिरे हुए, पीड़ित, उग्रहिंसा करनेवाले, आदि सभी लोगों को मेरे पास लाओ, मेरी प्रजा के दुःख दर्द में मुझे कोई प्रसन्नता नहीं होती है।

मैं उन्हें मुक्ति और मोक्ष दिलाने आया हूँ। मुझ पर विश्वास करो मेरे बच्चों। प्रार्थना और काम में मेरे प्रेरित (ईश्वर का सुसमाचार प्राचरक) बनो।

चिंतनः

एजेकिएल 22:30

मैंने ऐसे व्यक्ति की खोज की, जो मोरचाबन्दी करे, और जो मेरे सामने दीवार पर खड़ा होकर उसकी रक्षा करे। किन्तु मुझे ऐसा कोई नहीं मिला।

इसायाह 62:6 - येरूसालेम मैंने तेरी चार दीवारी पर पहरेदार को बैठा दिया। वे न दिन में चुप रहेंगे न रात में। प्रभु को सबका स्मरण दिलाना तुम्हारा कर्तव्य है।

जब अय्यूब अपने (तीन) मित्रों के साथ प्रार्थना कर चुका, तो प्रभु ने उसे फिर सम्पन्न कर दिया। और अय्यूब की जितनी सम्पत्ति थी उसकी दुगुनी कर दी।

प्रार्थनाः

प्रभु आपने जो कुछ हमारे लिए किया उन सबके लिये आपकी प्रशंसा और धन्यवाद करता हूँ। मैं आपके प्यार पर कभी शक नहीं कर सकता, विशेषकर जब आप यहाँ वेदा पर हाजिर रहते हैं। मेरी जागरूकता को बढ़ाइये प्रभु, कि मैं अपने प्रार्थना द्वारा संसार की सारी जरूरतों को आपके पास लाऊँ। आप जिसने भीड़ को खिलाया, आपकी सम्पन्नता के अनुसार जो भूखे और आर्थिक संकट में हैं उन पर दया कीजिए।

आप शाँति और जीवन देने आये, लेकिन फिर भी चारों ओर दुःख दर्द, हिंसा, खून-खराबा और आपदाएँ हैं। केवल आप ही शैतान को निकाल बाहर कर सकते हैं। क्योंकि आपने अपने दुःख-भोग और क्रूस मरण के द्वारा मृत्यु पर विजय पाई है और हमें मुक्ति दिलायी।

यहाँ वेदी पर आपका सामर्थ्य संचारित होता है। आपका प्यार सामर्थ्यवान और असीम है। हमें चँगा कीजिए, क्षमा कीजिए, छुटकारा दिलाइए।

आपके प्यार का सामर्थ्य क्रोध को शाँत करें, कड़वाहट को चँगा करे, युद्ध के सारे हथियार को शाँत कर दे, इस पृथ्वी पर से हिंसा और यातना के राक्षस को खदेड़ दे और अपनी प्रजा को इनसे मुक्त दीजिए प्रभु। आमेन।

(दया की माला विनती शोधकाग्नि की आत्माओं के लिए करें।)

ख्रीस्त बोलते हैं:

मेरे बच्चों आनन्दित हो और स्तुति प्रशंसा एवं धन्यवाद करो। जो समय तुमने मुझे दिया है व्यर्थ नहीं है। तुम कितने धन्य हो, जो जीवित हो, जो महान् आशीष तुमने पाई है, वह है विश्वास का वरदान, और विश्वास तुमको पूर्ण बनाता है। तुम्हारी अन्य जरूरते भी सुनी जाएँगी और रास्ते में पूरी हो जाएँगी। मैं प्रार्थनाएँ सुनता हूँ, तुम्हारे आहतों (घावों) को चँगा करता हूँ, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थना सुनने के लिए मुझे, अपने तरीके से कार्य करने की अनुमति दो। मुझ पर भरोसा करो। मुझे पूरी स्थिति की जानकारी है। मैं तुम्हें आगे भी देखूंगा, मैं तुम्हें फिर कभी व्यर्थ के तकलीफों में पड़ने न दूँगा।

तुम जितनी बार मेरे पास आ सकते हो आओ। जब तुम अत्यंत व्यस्त हो तब भी कम से कम, एक मुलाकात करके जाओ। हमेशा तुम्हारा स्वागत है। मैं तुम्हें शिक्षा दूँगा और तुम्हें छुटकारा दूँगा।

मैं तुम्हें अपनी आत्मा से भर दूँगा। तुम अपने महौल में शांति के साथ वापस जाकर दिन में आने वाली समस्याओं को संभाल सकते हो। मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम्हारे जीवन के हर तुफान को शाँत करूँगा।

तुमने इन आखिरी दिनों में मेरे सामर्थ को प्रकट होते देखा है। मेरे प्यार और सामर्थ्य की साक्षी दो। मेरे यूखरिस्तीय प्यार के बारे में दूसरों को बताओ। यूखरिस्त में मेरे सामर्थ्य के बारे में बताओ और उन्हें बताओ कि यूखरिस्त में वे मुझे देख सकते हैं मेरा प्यार कोमल है लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम्हारे साथ है, मेरे निमंत्रण को दूसरों में बांटो और मेरे पास आओ। (बच्चो मेरा भंडार भरा है तुम्हें वरदान देने के लिए)।

चिंतनः

मत्ती 11:28-29

थके मांदे और बोझ से दबे हुए लोगों तुम सब मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जुवा अपने उपर ले लो और मुझसे सीखो। मैं स्वभाव से नम्र और विनीत हूँ।

पहला पेत्रुस 5:6-7 - आप शक्तिशाली ईश्वर के सामने विनम्र बने रहें, जिससे वे आपको उपयुक्त समय में उपर उठाये। आप अपनी सारी चिंताएँ उस पर डाल दें क्योंकि वह आपकी सुधि लेता है।

गणना 6:24-26 - प्रभु तुम लोगों को आशीर्वाद प्रदान करे और सुरक्षित रखे। प्रभु तुम लोगों पर प्रसन्न हो और तुम लोगों पर दया करे। प्रभु तुम लोगों पर कृपा दृष्टि करे और तुम लोगों को शाँति प्रदान करे।

योशुआ 1:9 - क्या मैने तुमसे यह नहीं कहा - दृढ़ बने रहो और ढ़ारस रखो? तुम न डरोगे न घबराओगे। क्योंकि तुम जहाँ कहीं भी जाओगे, प्रभु तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ होगा।

प्रार्थना:

मेरे प्रभु इन नौ दिनों में आपके साथ रहा और आपने मेरा स्पर्श किया। प्रभु के घर में रहना कितना अच्छा है। प्रभु मैंने जो शाँति और आशीर्वाद पाया है उन सबके लिए आपकी स्तुति एवं प्रशंसा हो।

प्रभु से मिले आशीषों को याद करें।

आपने जो वचन मुझे सुनाए वे मेरे लिए जीवन और आत्मा हैं। प्रभु सच में आपने मुझे पुनर्जीवित किया और उपर उठाया। मैं आपके पास एक पापी की तरह आया। मैं उस वक्त आपके पास आया जब मेरा मन चिन्ताओं से व्याकुल था जब मेरी आत्मा अकेलेपन और चोटों

से पीड़ित थी। जब मेरा हृदय प्यारे जनों के लिए दुःखी था। मैं उस समय आया था जब मेरा शरीर थकान और दर्द से भरा हुआ था।

मेरे येसु आपने मुझे अपनाया। आपके युखरिस्तीय हृदय में मुझे शरण दी। आपने मुझसे स्नेह किया, मुझे चँगा किया और आपके आत्मा की वर्षा मेरे उपर की । और प्यारे प्रभु मैं कृतज्ञा भरे हृदय से आपका दंडवत करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ।

[दया की माला विनती - सभी उत्साहहीन आत्माओं के लिए और ईश्वर से प्राप्त सभी आशीषों के लिए धन्यवाद देने के लिए बोलें]

+++++++

दैनिक प्रार्थना / गृह कार्य

ईश्वर से हर आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए, तथा स्वयं को विनाश से बचाने के लिए (पृ.सं. 97-112) की दैनिक प्रार्थनाएँ और गृहकार्य अवश्य करें। कुल मिलाकर 20 प्रार्थनाएँ हैं जिन्हें तीन भागों में बाँटा गया है।
व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ, सामूहिक प्रार्थनाएँ और विशेष प्रार्थनाएँ।

I व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ

1. आशीष की प्रार्थना - CCCC 551;
2. आराधना - CCCC 552;
3. निवेदन (याचिका) - CCCC 553;
4. मध्यस्थ प्रार्थना - CCCC 554;
5. धन्यवाद की प्रार्थना - CCCC 555;
6. प्रशंसा /स्तुतिगान (महिमा गान) - CCCC 556;
7. मुखर प्रार्थना - CCCC 569;
8. ध्यान प्रार्थना - CCCC 570;
9. चिंतन की स्थिति - CCCC 571.

व्यक्तिगत प्रार्थना की ये नौ तत्व

CCCC 550 - ख्रीस्तीय प्रार्थना की आवश्यक रूप (तरीके) क्या है?

(CCC 2643–2644)

- वे हैं आशीर्वाद और आराधना, निवेदन और मध्यस्थ प्रार्थना, स्तुति और धन्यवाद की प्रार्थना। यूखरिस्त में ये प्रार्थनाएँ समाविष्ट है और इसमें प्रार्थना के सभी रूपों का प्रकटीकरण है।

CCCC 551 - आशीर्वाद क्या है? CCC 2626 - 2627, 2645

ईश्वर के वरदानों के प्रति प्रतिक्रिया ही आशीर्वाद की प्रार्थना है। हम उस सर्वशक्तिमान् को आशीर्वाद देते हैं जो पहले हमें आशीर्वाद देता है और हमें अपने उपहारों से भरता है।

CCCC 552 आराधना का निरूपण कैसे करें? CCC 2628

मानवजाति के द्वारा दीनतापूर्वक यह स्वीकार करना (आभार प्रकट करना) कि वे त्रिएक पवित्र निर्माता की सृष्टि हैं यही आराधना है।

CCCC 553 - निवेदन/याचिका प्रार्थनाएँ कितनी प्रकार की है? CCC 2629 - 2633, 2646

अपने दोष-अपराधों के लिए क्षमा माँगे या दीनतापूर्वक भरोसे के साथ आध्यात्मिक या भौतिक आवश्यकताओं के लिए निवेदन करें लेकिन सबसे पहले ईश्वर के राज्य की खोज करें।

CCCC 554 मध्यस्थ प्रार्थना में क्या क्या सम्मिलित है? CCC 2634 - 2636, 2647

मध्यस्थ प्रार्थना में दूसरों की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना की जाती है। इसके द्वारा हम येसु की प्रार्थना में शामिल होते हैं। जैसा कि येसु मध्यस्थ प्रार्थना द्वारा हम सबके लिए पिता से माँगते हैं। बैरियों के लिए भी मध्यस्थ प्रार्थना करनी चाहिए।

CCCC 555 - हमें कब ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए? CCC 2637 - 2638, 2648

कलीसिया निरंतर प्रभु का धन्यवाद करती है। मिस्सा बलिदान समारोह के द्वारा कलीसिया ख्रीस्त के साथ पिता परमेश्वर का धन्यवाद गुणगान करती है। ख्रीस्तीयों के लिए हर घटना धन्यवाद का कारण है।

CCCC 556 - प्रशंसा /स्तुतिगान प्रार्थना क्या है? CCC 2639 - 2643, 2649.

स्तुति और प्रशंसा प्रार्थना का वह रूप है जिसके द्वारा अति शीघ्र प्रभु को अनुभव किया जा सकता है। यह पूर्णतः उदासीन प्रार्थना है। ईश्वर के स्तुति गान द्वारा ईश्वर की ही महिमा होती है। क्योंकि वह ईश्वर है।

CCCC 569–मुखर/मौखिक प्रार्थना की व्याख्या किस प्रकार से की जा सकती है?

अंतरात्मा की प्रार्थना शरीर के द्वारा अर्थात मुख से उच्चारित करके की जाती है। हृदय के अंतरतम की प्रार्थनाएँ मुख से व्यक्त नहीं की जा सकतीं, यह व्यक्तिगत विश्वास् के द्वारा हृदय से फूट निकलता है। "हे पिता हमारे" की प्रार्थना जो येसु ने सिखाई - जो मुखर प्रार्थना का सही रूप है।

CCCC 570 ध्यान मनन क्या है? CCC 2705 - 2708, 2723

मनन ध्यान प्रार्थना, बाइबिल में ईश्वर के वचनों पर मनन-चिंतन या विचार करना है। मनन-चिंतन, सोच विचार, कल्पना, भावनाओं तथा इच्छाओं को एकाग्र कर हमारे विश्वास को गहरा करता है। हमारे हृदय का परिवर्तन करता है, तथा ख्रीस्त का अनुसरण करने की इच्छा शक्ति को मजबूत करता है। यह ईश्वर के साथ प्रेम संबंध की पहली सीढ़ी है।

CCCC 571 ध्यान प्रार्थना क्या है? CCC 2709 - 2719, 2724, 2734, 2739, 2741

मननशील-ध्यान प्रार्थना, शाँति और प्यार से ही, ईश्वर की ओर टकटकी लगाना या ईश्वर को निहारना है। यह ईश्वर का वरदान है। निश्चल विश्वास के साथ प्रार्थना ख्रीस्त को खोजने का क्षण है, पिता की पवित्र इच्छा के प्रति समर्पण, स्वयं को पवित्र आत्मा की कार्रवाई के अधीन रखता है। अविला की संत तेरेसा के अनुसार ध्यान प्रार्थना, ईश्वर के साथ मित्रता में आत्मीयता का अदान -प्रदान है। और इसके लिए बार-बार प्रभु के साथ समय गुजारने के लिए एकांतता की जरूरत पड़ती है।

गृह कार्य के नियम संग्रह या विधान जिन्हें व्यक्तिगत प्रार्थना को प्रभावकारी बनाने के लिए पूरा करना जरूरी है।

1. पश्चात्ताप - (पृष्ट सं. 10)
2. मेल मिलाप - (पृष्ट सं. 10)
3. येसु में विश्वास - (पृष्ट. सं.10)
4. ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध रखना - (पृष्ट.सं. 10)
5. ईश्वर के वचनों तथा कलीसिया की शिक्षा के अनुसार जीवन जीने का प्रयास करें - (पृ.सं. 10)
6. साक्रमेंत ग्रहण करना (बारम्बार परमप्रसाद ग्रहण करना और पाप स्वीकार करना - (पृ.सं. 10)
7. 14-दया के काम करें - (पृ.सं. 11)
8. जब भी संभव हो हाथ रख कर प्रार्थना करें - (पृ.सं. 11)
9. पीड़ा को यह समझ कर ग्रहण न करें कि 'यह ईश्वर की ओर से है' बल्कि इसलिए ग्रहण करें कि 'यह मेरे कल्याण के लिए है' - (पृ.सं. 11)

II. सामूहिक प्रार्थना (पृ.सं. 15-32)

दूत का संदेश पृ.सं. 2 (तीन बार रोज)

1. समर्पण की प्रार्थना -पृ.सं. 15
2. सबके लिए प्रार्थना - पृ.सं. 18
3. संरक्षण तथा छुटकारा/ मुक्ति पाने की प्रार्थना - पृ.सं. 18
4. पाँच व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ, करुणा की माला विनती के साथ -पृ.सं. 23
5. रोजरी माला और पूजन पद्धति के द्वारा पाँच मध्यस्थ प्रार्थनाएँ (पृ.सं. 31)
6. बाइबिल डायरी (पृ.सं. 31) (प्रति दिन का सुसमाचार)
7. पढ़ें गये सुसमाचार पर पाँच मिनट मनन करना (पृ.सं. 31)
8. मिस्सा बलिदान में भाग लेना या 'मेरे पास आओ' की नोवेना प्रार्थना (यदि मिस्सा बलिदान में भाग लेना संभव नहीं है तो) पृ.सं. 32 (63-96)

5. गृह कार्य के नियम संग्रह जो सामूहिक प्रार्थना को प्रभावशाली बनाती है।

1. मारकुस 11:24 - आशान्वित विश्वास
2. लूकस 18:1-8 - प्रार्थना में सुदृढ़ होना। उदाहरण अन्यायी न्यायाधीश और विधवा। तब तक अनवरत प्रार्थना करते रहें जब तक प्रार्थना (का फल नहीं मिलता) सुनी नहीं जाती। (तब तक प्रार्थना करते रहें जब तक कुछ मिल नहीं जाता है)
3. लूकस 18:9-14 - स्वयं को सफाई न देकर पश्चात्ताप करें। प्रभु मुझ पर दया कीजिए। स्वयं में अयोग्यता के भाव का बोध होना आशीर्वाद पाने की कुंजी है।
4. मत्ती 5:23-24 - प्रार्थना शुरू करने के पहले अपने विरोधी से मेल-मिलाप कर लो।
5. लूकस11:5-8 - मध्यस्थ प्रार्थना द्वारा आग्रह करते रहना।

III विशेष प्रार्थना या खास प्रार्थना(यदि इस की ज़रूरत पड़ी तो)

1. आध्यात्मिक गहन चिकित्सा प्रार्थना (पृ.सं. 32)

   जब हम कुछ कठिनाइयाँ, विशेषकर गंभीर समस्याओं, संकटों और बीमारियों के दौर से गुजर रहे हैं तो इनसे पार लगने या इन पर विजय पाने के लिए नौ दिन की तीव्र भावपूर्ण प्रार्थना की सलाह दी जाती है।

1. एक दिन में नौ करुणा की माला विनती।
2. एक दिन में संत मती से लेकर संत योहन के सुसमाचार का नौ अध्याय अविराम पढ़ें। प्रत्येक सुसमाचार से नौ अध्याय नहीं, लेकिन कुल मिलाकर नौ अध्याय पढ़ें।
3. नौ दिन तक प्रतिदिन एक घंटा पवित्र साक्रामेंत की आराधना करें।
4. इन नौ दिनों के अंदर एक बार अच्छी रीति से पाप स्वीकार करना अनिवार्य है।
5. नौ दिन लगातार मिस्सा बलिदान में भाग लें और परमप्रसाद ग्रहण करें।

2. संत पापा लियो तेरहवे की छुटकारा पाने की प्रार्थना (पृ.सं. 35-40)

   कलीसिया अयाजक वर्ग को छुटकारे की इस प्रार्थना को करने की इजाजत देती है, जब वे काला जादू के प्रभाव से पीड़ित हैं या उन्हें लगता है, कि उन पर बुरी आत्मा का प्रभाव है। यह प्रार्थना पापों की क्षमा पाने के बाद ही की जानी चाहिए।

   अपदूत निरासन (अपदूत भगाने की प्रार्थना केवल पुरोहितों को ही करने की अनुमति है) – CIC 1172 - 1173 या बांधने और भगाने की प्रार्थना (यह प्रार्थना सिर्फ आपके लिए और पहली पीढ़ी के रक्त संबंधी के लिए ही वैध है)

येसु के नाम पर.....के दुष्ट आत्मा, मैं तुम्हें बाँधता हूँ और निकाल बाहर करता हूँ और येसु के पैरों के नीचे डालता हूँ (इब्रानियों 10:13) और ये सभी आत्माएँ येसु के पुनरागमन तक येसु के पैरों के तले रहेंगी। येसु तुम्हारा न्याय करे (जूद1:8)

3. पापों की क्षमा कैसे मिलेगी (पृ.सं. 34)

1. संकल्प करें कि फिर से पाप न करें (पाप के फल का आनन्द न उठाने का संकल्प करें) प्रवक्ता 37:17-18
2. अब से पवित्र जीवन जीएँ (योहन 5:14)
3. अपने विरोधी को क्षमा करें (मत्ती 6:14-15)
4. क्षति पूर्ति करें (जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई करें) (लूक 19:1-10)
5. उपवास विनती करें (योना 3:4-10)
6. दान करो (टोबित 4:10-11)
7. पुरोहित के पास जाकर पापस्वीकार करें (योहन 20:23, याकूब 5:14-16)

CIC 989 - वर्ष में कम से कम एक बार पापस्वीकार करें – CIC 988-प्रकार और संख्या CCCC 305 कहता है कि परमप्रसाद ग्रहण करने के पहले हमेशा पापस्वीकार करें, यदि आत्मामारू पाप किया हो।

सभी गैर-काथलिक पापों की क्षमा के लिए सातवें नंबर को छोड़कर बाकी 6 का पालन करें।

यदि आप प्रतिदिन गृहकार्य करते हैं, तो आपकी सारी समस्याओं का समाधान होगा। (प्रतिदिन करीब 2.40 घंटे प्रार्थना करें और निर्धारित गृहकार्य करें।) और आप प्रतिदिन 13 आशीर्वाद का आनंद उठाएँ। (पृ.सं. 7-9)

गृह कार्य

ईश्वर को कैसे प्यार करें ?

यदि आप ईश्वर को प्यार करते हैं तो सभी बातों में आपके कल्याण के लिए ईश्वर आपकी सहायता करते हैं (रोमियों 8:28)

1. आज्ञाओं का पालन करें। जो ईश्वर को प्यार करते हैं वे ईश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं (1योहन. 5:3)। येसु ने कहा - यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करो। (योहन 14:15).
2. अपने बैरियों से बैरियों से प्रेम करो। 1 योहन 4:20. में कहा गया है कि, यदि कोई कहता है कि मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ पर अपने भाई और बहन से बैर करता है वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई-बहन जिन्हें वह देखता है प्यार नहीं करता, तो ईश्वर को जिसे उसने कभी देखा नहीं उसे प्यार नहीं कर सकता। पद सं. 21 कहता है - हमें मसीह से यह आदेश मिला है कि जो ईश्वर को प्यार करता है उसे अपने भाई-बहन को भी प्यार करना चाहिए।
3. कलीसिया को प्यार करो (प्रेरित 9:4) कलीसिया पर अत्याचार मत करो, लेकिन कलीसिया के अधिकारिक संरचना के प्रेमी और प्रतिपालक बनो। कलीसिया को प्यार किए बिना कोई भी ईश्वर को प्यार नहीं कर सकता। 1:24 कहता है कि कलीसिया

ख्रीस्त का शरीर है (CCC1264) जो भी येसु पर विश्वास करता है वह ख्रीस्त का शरीर बन जाता है। इसलिए हर ख्रीस्तीय वर्ग को प्यार करना चाहिए। कुछ ख्रीस्तीय वर्ग माता कलीसिया में पूर्ण रूप से सम्मिलित है और बाकी केवल आंशिक रूप में सम्मिलित हैं। लेकिन जो भी ख्रीस्त में विश्वास करते हैं वे भी भाई बहन है। (CCCC 163)

4. प्रार्थना के लिए समय निकालें: प्रार्थना ईश्वर के साथ रिश्ता है। (CCCC 534)। प्रार्थना ईश्वर से चेतन, एकनिष्ठ वार्तालाप है और इससे सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ आत्मीय संबंध बढ़ता है। इस संबंध को स्थापित करने और इस संबंध में आगे बढ़ने के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक, उद्धार, आंतरिक चंगाई नामक लोगोस की प्रार्थना पुस्तक से दैनिक प्रार्थना और गृहकार्य पृ.सं. 97-112 सद्भाव और इमानदारी से अवश्य करें।

II. ये चार पद्धतियाँ किसी के जीवन की प्रायः सभी समस्याओं का समाधान करेंगी। सभी प्रकार के आशीर्वाद को पाने के लिए, सभी अधिकारों को पाने के लिए तथा सभी कोटि के रिश्तों का आनंद उठाने के लिए सिर्फ ये चार रीति ही आपनाएँ।

1. ईश्वर का वचन सुनें, ईश्वर का वचन पढ़ें (1 कुरि. 1:21) और ईश्वर के वचन का कर्त्ता बनें। इसलिए ईश्वर के वचन की उद्घाघोषणा तब तक सुनते रहें जब तक आपकी समस्या बनी रहती है।
2. पुरोहित से प्रार्थना माँगे (उत्पत्ति 20:17)। कलीसिया के पुरोहितों द्वारा पवित्र मिस्सा एक सार्वजनिक प्रार्थना है, इसलिए यदि संभव हो तो प्रतिदिन पवित्र मिस्सा में भाग लें जबतक आपकी संगीन समस्या समाप्त नहीं हो जाती।
3. दवाई का प्रयोग करें (प्रवक्ता 38:1-14) कुछ समस्याओं के समाधान तथा कुछ बीमारियों की चँगाई के लिए वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल जरूरी है।

4. पवित्र आत्मा के सामर्थ्य का अभिषेक पाइए (1योहन. 2:27) इसके लिए लोगोस की प्रार्थना पुस्तक (पृ.सं. 97-112) में उल्लेखित दैनिक प्रार्थना और गृह कार्य अवश्य करें।

ये चार पद्धतियाँ हमें आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने, सारी समस्याओं का समाधान करने और भविष्य में आनेवाली सारी कठिनाइयों को रोकने में मदद करती हैं।

इन तीन श्रेणी के लोगों को चँगाई नहीं मिल सकती है या शीघ्र चँगे नहीं हो सकते हैं। (आराम नही मिलेगा)।

1. उन लोगों के लिए जिनको मुत्यु का समय आ गया है। प्रभु के द्वारा जन्म के पूर्व ही या कुछ अच्छा या बुरा घटित होने पूर्व ही मेरे दिनों की सीमा निर्धारित की गई है। स्तोत्र ग्रंथ 139:16। ऐसे व्यक्ति चँगाई प्राप्त नहीं करेंगे। उनके लिए बीमारी केवल मृत्यु और अनन्त जीवन की तैयारी के लिए है।
2. वे पवित्र आत्माएँ जिन्हें अद्‌भुत चमत्कारिक रहस्योद्‌घाटन वरदान मिला है और उन्हें दुर्बलता, कष्ट या बीमारी में भी बड़ा आनन्द मिलता है। वे शैतान को चुनौती देकर बुराइयों पर विजयी होने के लिए बुलाए गए हैं। (2 कुरि. 12:9) और उन्हें चँगाई नही मिल सकती है। उदाहरण के लिए - येसु की छोटी संत तेरेसा, केरल की संत अल्फोंसा आदि।
3. उन्हें जिन्हें विश्वास में आगे बढ़ने (या विश्वास में पूर्ण होने) की जरूरत है। वे विशेष रूप से बुलाये गये हैं कि वे सामर्थ्य भरी करिश्मे का वरदान पाकर कलीसिया की खास सेवकाई कर सकें। (1 पेत्रुस 4:12-14) उदाहरण - उस लड़के के पिता ने जिसके बेटे को मिरगी की बीमारी थी - इस प्रकार प्रार्थना की - प्रभु मेरे विश्वास को बढ़ाइये, मेरे अल्प विश्वास की कमी पूरी

कीजिए (मारकुस 9:24) और उसका बेटा तुरंत अच्छा हो गया, क्योंकि येसु ने उसके विश्वास को बढ़ाया, जैसा उसने प्रार्थना की थी।

ऐसे व्यक्तियों को अलौकिक चँगाई मिलती है लेकिन प्राकृतिक चँगाई उनके जीवन में नहीं मिल पाती है।

लेकिन इन तीन श्रेणि के व्यक्तियों की संख्या कुल जनसंख्या के एक प्रतिशत से भी कम होती हैं।

III आपके सभी कार्य इन पाँच सिद्धाँतों के द्वारा मार्गदर्शित होना चाहिए ऐसे कार्य पश्चात्ताप के कार्य कहलाते हैं (मारकुस 1:15).

1. आप जो कुछ भी करें सब ईश्वर की महिमा के लिए करें (1 कुरि. 10:31)
2. आप के सभी कार्य दूसरों के शरीर और आत्मा की मुक्ति के लिए हो (मत्ती 18:6)
3. वे स्वयं के पवित्रीकरण के लिए होना चाहिए (मत्ती 16:26).
4. आपके कार्य धर्म ग्रंथ और येसु के वचनों के अनुसार होना चाहिए (मत्ती 22:29)
5. आपके कार्य कलीसिया की शिक्षा के अनुसार होना चाहिए (1 थेसलनीकियों 2:13) आपने हम से ईश्वर का संदेश सुना और ग्रहण किया, वह मनुष्यों का नहीं, वास्तव में ईश्वर का वचन सुनकर स्वीकार किया है।

आपके कार्य यदि इन सिद्धाँतों के आधार पर क्रियाशील हैं, तब ये कार्य उचित माने जाते हैं। इस प्रकार आप इन पाँच सिद्धाँतों के आधार पर अपने कार्य का अवलोकन कर सकते हैं, कि आपके कार्य उचित हैं या गलत हैं।

IV. पवित्र कलीसिया में चँगाई और आशीर्वाद पाने के दस श्रोत है। इसलिए इन दस श्रोतों का बराबर उपयोग कीजिए।

1. ईश्वर - निर्गमन ग्रंथ 15:26 'मैं वह प्रभु हूँ जो तुम्हें स्वस्थ्य करता हूँ। दवाइयाँ फेल हो सकती हैं लेकिन प्रभु कभी फेल नहीं होता। एक स्त्री जो बारह वर्षों से रक्तश्राव से पीड़ित थी, और उसने सारे पैसे इलाज में खर्च कर दिये, पर स्वस्थ्य नहीं हुई, लेकिन येसु ने उसे चँगा किया (लूकस 8:43-44)
2. ईश्वर का वचन सारी बीमारियों को चँगा करता है (स्तोत्र 107:20)
3. येसु जो पवित्र साक्रमेंत में रहते है, 'चँगा करते है'। (CCC 1509) बीमारों को चँगा करो। कलीसिया को यह उत्तरदायित्व ईश्वर से मिला है और कलीसिया इस कार्य को बीमारों की देखभाल कर के, उनके साथ उनके लिए मध्यस्थ प्रार्थना करके, इस कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास करती है।

वह जीवन दाता ख्रीस्त की उपस्थिति पर विश्वास करती है, जो शरीर और आत्मा का वैद्य है। यह उपस्थिति विशेष कर साक्रमेंत के द्वारा क्रियाशील है, विशेष कर मिस्सा बलिदान में जो रोटी है, जिससे अनन्त जीवन मिलता है, संत पौलुस इसे शारीरिक चँगाई से जोड़ते है।

4. कुछ व्यक्ति चँगाई का काम करते हैं (CCC 1508) कुछ लोगों को पवित्र आत्मा विशेष चमत्कारिक चँगाई का वरदान देता है। ताकि पुनर्जीवित प्रभु की कृपा का सामर्थ्य प्रकट हो। कभी-कभी तीव्र प्रार्थना के बावजूद हर बीमारी ठीक नहीं होती। और इस प्रकार संत पौलुस ने सीखा होगा कि मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है। क्योंकि तुम्हारी दुर्बलता में मेरा सामर्थ्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है। मैं यह मानता हूँ कि मैं अपने शरीर में जो पीड़ा सह रहा हूँ - ख्रीस्त के शरीर में जो पीड़ा की कमी रह गई उसकी पूर्ति करता हूँ, और ख्रीस्त का शरीर है कलीसिया।

5. संत, उनके अवशेष और आशीष की हुई वस्तुओं में बीमारी को चँगा करने की शक्ति है। (LG.11) संतों की मध्यस्थता तथा नोवेना में बीमारो को चँगा करने की शक्ति है।
6. वेलंकनि, लूर्द और संसार में माता मरियम के सभी तीर्थस्थलों पर धन्य कुँवारी माता मरियम की मध्यस्थ प्रार्थना द्वारा भी चँगाई मिलती है। माता मरियम से रोजरी माला के द्वारा भी बहुतों को चँगाई मिलती है।
7. तीर्थ स्थलों और कुछ चयनात्मक जगहों पर भी ईश्वर का सामर्थ्य प्रकट होता है और चँगाई मिलती है (उदाहरण योहन 5) बेथसाइदा का कुंड)।
8. दवाई, डाक्टर शल्य चिकित्सा, सर्जरी आदि के द्वारा भी स्वस्थ्य लाभ होता है। (प्रवक्ता 38:1-14)
9. हमारे विश्वास के कार्य और प्रार्थना में भी बीमारियों को चँगा करने की शक्ति होती है।

येसु ने उस पर हाथ रखकर प्रार्थना की और थूक से मिट्टी सान कर आँखों पर लगाया और कहा जाकर धो लो। अंधे ने विश्वास कर वैसा ही किया और वह देखने लगा। (मारकुस 8:22-24).

10 सभी 7 पवित्र संस्कार, विशेषकर पापस्वीकार और पवित्र मिस्सा बलिदान में प्रायः सभी बीमारियों को चँगा करने की शक्ति है। CCCC 295 कहता है पापस्वीकार और अंतिम संस्कार चँगाई के संस्कार है।

V. करिश्माई नवीनीकरण आन्दोलन (पृ.सं. 12-14) में कुछ सेवकाई अपनी प्रतिभा, समय और सम्पत्ति की उपलब्धता के अनुसार करें।

पवित्र आत्मा के द्वारा, कलीसिया की भिन्न तरह से सेवकाई करने के लिए आपको वरदान मिले हैं। (CCCC 160)

1. प्रेरितिक मंत्रालय (सेवकाई) - धर्माध्यक्षों के लिए
2. पुरोहिताई सेवाकाई - पुरोहितों के लिए
3. धर्मसंघियों / समर्पित लोगों की सेवकाई –(सिर्फ उन्हीं के लिए)
4. उपदेश मंत्रालय (प्रवचन) की सेवाकाई - 1 कुरि. 9:16, रोमि 10:15) सुसमाचार प्रचारक - शुभ संदेश सुनाने वालों के चरण कितने सुन्दर लगते हैं?
5. सलाहकार/परामर्शदाता की सेवाकाई (प्रवक्ता 25:4-5)
6. मध्यस्थ प्रार्थना की सेवाकाई (1 तिमथी 2:1-3)
7. शारीरिक चँगाई की सेवाकाई - मारकुस 16:18, 1 कुरि. 3:16, मनुष्य का शरीर ईश्वर का मंदिर है।
8. आंतरिक चंगाई की सेवकाई - स्तोत्र 34:18
9. छुटकारा दिलाने की सेवकाई - लूकस 13:10-17
10. आर्थिक चँगाई की सेवाकाई - योशुआ 1:8, विधिविवरण 28:1-14
11. परिवारिक चंगाई की सेवाकाई - प्रेरित च. 16:31
12. पल्ली, साधना केन्द्र, संस्था आदि में स्वयं सेवक
13. पल्ली में कटेकिसम की शिक्षा देना
14. प्रार्थना सभा, साधना केन्द्र, सम्मेलन आदि का आयोजन करना।
15. वृद्ध आश्रम, बेसहारों के लिए घर, स्वस्थ्य सेवा केन्द्र में सेवा, या गरीबों के लिए भोजन का वितरण करना आदि।
16. संगीत मंडली मिनिस्ट्री या स्तुति एवं आराधना (2 राजओं 3:15).
17. साक्षी या गवाही देना - प्रेरित चरित 1:18

18. प्रचार करना - लोगों को साधना केन्द्र में भाग लेने के लिए बढ़ावा देना। (याकूब 5:20)

19. संचार माध्यम - ख्रीस्तीय साहित्य का वितरण, बाइबिल वितरण

20. दशमांश, समय या सम्पत्ति का दान करना

(फि. 4:16-20, मलआकी 3:8-10, उत्पति 14:17-20)

प्रभु ने आपको चँगाई देने के लिए इन सभी प्रावधान की व्यवस्था, कलीसिया और संसार में की है अतः इसका उपयोग कीजिए।

येसु से उत्कृष्ट रिश्ता बनाने के लिए, अपने आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए, सभी आशीर्वाद पाने के लिए, सभी अधिकार पाने के लिए और प्रभु के साथ हर वर्ग के रिश्ते का आनन्द पाने के लिए, लोगोस की प्रार्थना पुस्तक से (पृ.सं. 97-112) की दैनिक प्रार्थना और गृह कार्य कीजिए।

जिन्हें मुक्ति नहीं मिली है उन्हें कैसे बचायेंगे (मुक्ति दिलाएँगे)?

1. ईश्वरीय दया को एक बार समर्पण करके, ईश्वरीय दया की मजुंषा प्रार्थना उसके लिए बोलना ।
2. प्रतिदिन समर्पण की प्रार्थना करना (पृ.सं. 15).
3. प्रतिदिन ईश्वरीय दया की माला विनती बोलना (पृ.सं. 20-23)

पूर्वजों का कोई भी अभिशाप आपको प्रभावित नहीं करता। (रोमी 8:1) CCC 1472

1. संत थोमस अक्वीनस सुम्मा (1427-1429) में कहता है - पिता के पापों का प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ेगा।
2. एजेकिएल 18:19-23 - पुरखों का कोई अभिशाप नहीं उतरता है। कोई पैतृक अभिशाप नहीं है।

18:19 इस पर भी तुम यह कहते हो कि पिता के पाप का दंड पुत्र क्यों नहीं भोगेगा? लेकिन वह धार्मिकता और न्याय के पथ पर चलता रहा है तथा उसने सावधानी से मेरी आज्ञाओं का पालन किया है। वह अवश्य जीवित रहेगा।

18:20 जो पाप करता है वह मर जाएगा, पुत्र अपने पिता का दंड नहीं भोगेगा और पुत्र के पाप का दंड पिता नहीं भोगेगा। धर्मी को अपनी धार्मिकता का फल मिलेगा और दुष्ट को अपनी दुष्टता का फल मिलेगा।

संकेत चिन्हः

1. CCCC - कार्थलिक कलीसिया की धार्मिक शिक्षा का सारांश
2. CCC - कार्थलिक कलीसिया की धार्मिक शिक्षा
3. सीआईसी /CIC - कनान का कानून
4. (पृ.सं.) फादर जोस द्वारा लिखी गई पुस्तक 'पवित्र आत्मा का अभिषेक, चंगाई, मुक्ति' की पृष्ट संख्या)

प्रार्थना के लिए सम्पर्क करें।

रेवरेन्ड. डा. जोस वेट्टियांकल वी.सी.

e-mail: frjosevet@gmail.com
facebook.com/FrJoseVettiyankal
twitter.com/frjosevel
Blog.https//frjosevettiyankal.wordpress.com
www.frjosevettiyankal.org